

द ब्रज फाउण्डेशन

www.brajfoundation.org

भगवान् श्रीराधाकृष्ण की लीलाओं से जुड़े ब्रज के 137 वनों,
1000 ऐतिहासिक कुण्डों, 72 वर्ग कि.मी. दिव्य पर्वतों,
असंख्य गोवंश एवं ऐतिहासिक भवनों के जीर्णोद्धार तथा श्रीयमुनाजी
के स्वरूप को भव्य, दिव्य एवं दर्शनीय बनाने के प्रयास में
द ब्रज फाउण्डेशन संस्था रात-दिन जुटी है।

ब्रज के तीन वन और तीन ऐतिहासिक भवनों के जीर्णोद्धार सहित
वृन्दावन के ब्रह्मकुण्ड, मथुरा के कोइले घाट एवं बरसाना के
गहवर वन व जल महल के साथ-साथ अन्य लगभग 50 दिव्य कुण्डों
का जीर्णोद्धार इस संस्था द्वारा कराया जा चुका है।

ब्रज संस्कृति और विकास की प्रक्रिया पर अनेक फिल्में बनाकर
टी.वी. चैनल्स पर प्रसारित करायी गयी हैं
जिससे ब्रज के बारे में पूरे विश्व में चेतना फैले।

ब्रजभूमि को सजाने-सँवारने के इस दिव्य अभियान से आप भी जुड़ें-
आपका स्वागत है।

-सम्पर्क-

- नई दिल्ली : सी 6/28 सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया
हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोन : 011-26566800 फैक्स : 26519080
- वृन्दावन : 303 केशव कुंज, इस्कॉन के सामने, रमणरेती
वृन्दावन-281121
फोन : 0565-2540084, 9927337111



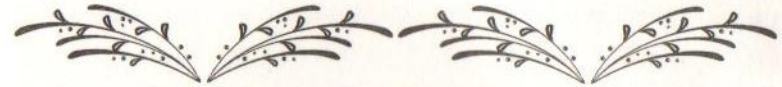
Harinam 7500987654

ब्रज रस माधुरी

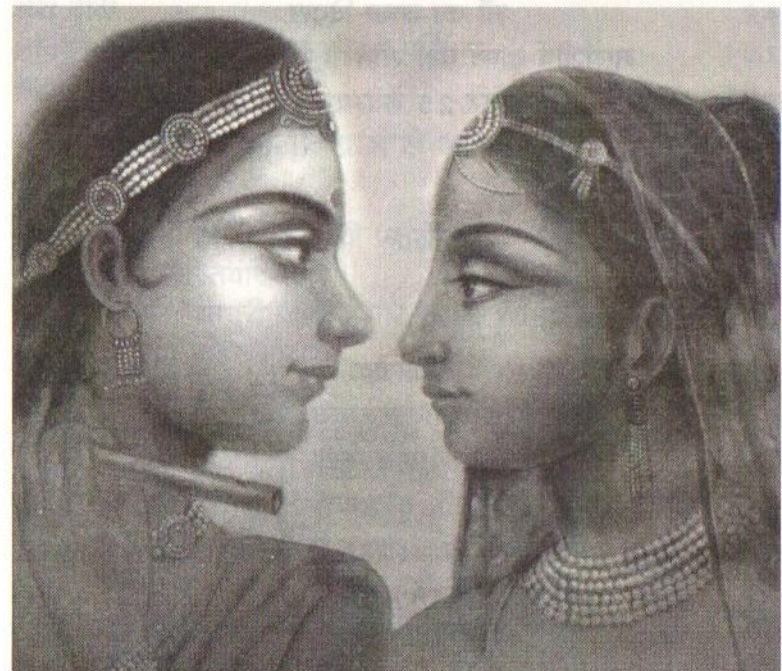
ब्रज के भजनों का अनूठा संग्रह



संकलन : भक्तिमती माया गुप्ता



ब्रज रस माधुरी



संकलन : भक्तिमती माया गुप्ता



सिद्धांत सप्त सप्त

संस्करण : प्रथम 1001 प्रतियाँ

माँ का जन्म दिवस

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सप्तमी संवत् 2070

तदनुसार 25 नवम्बर 2013

★

प्रकाशक

श्रीश्रीगौराधागोकुलनन्दन सेवा ट्रस्ट

19 भजन कुटीर

शीतल छाया, रमणरेती, वृन्दावन-281121 (उ.प्र.)

दूरध्वनि- वृन्दावन : (0565) 2540802

दिल्ली : (011) 26566800

★

मुद्रण-संयोजन

श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, लोई बाजार, वृन्दावन-281121

दूरध्वनि : (0565) 2442415 / 7500987654

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
दो शब्द	9
ब्रजरज माहात्म्य	11
माँ के नीलमणि गोपाल के चमत्कार	19
मेरी दीदी	24
भक्तिमती माया गुप्ता का जीवन परिचय	101
श्रद्धांजलि के दो शब्द	104

अकारादि क्रम से भजन-सूची

पद संख्या	पृष्ठ संख्या
22 अखियाँ हरि दरसन की प्यासी	27
188 अथ स्वस्तिवाचनम्	100
157 अनूपम माधुरी जोड़ी हमारे श्याम श्यामा की	85
188 अपराध सहस्रभाजनं	100
83 अब की टेक हमारी	53
37 अब कैसे छूटै नाम रट लागी	34
28 अब तो बीत चली बरसात कहो	30
124 अब तौ हरी नाम लौ लागी	71
155 अब हौं नाच्यौ बहुल गुपाल	83
164 अभिमान नहीं करना दूध दही से	87
62 अरे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा	45
172 अल्लाह तेरो नाम	90
153 अलबेलो छैल चिकनिया जग	83
02 आओगे कब गिरधारी	19
52 आओ सब मिल गायेँ गुण जान रे	40
58 आजा आजा इधर ए नन्द दुलारे आजा	43
88 आप बसौ बरसाने अली	56
183 आरती दिव्य दम्पति जी की	95
184 आरती श्रीहरि घट-घट वासी	96

185	आरती श्री सत्यनारायण जी की	97
186	आरती श्री शिव जी की	98
117	आली री महानै लागे वृन्दावन नीको	68
119	आली री मेरे नैना बान पड़ी	69
21	इस तन में रमा करना	27
163	उठे कृष्ण तरको भयो त्यारी	87
85	ऊधो मैंने सब कारे अजमाये	54
100	ऊधो सुनि-सुनि आवत हँसी	62
166	ऊँचे से परवत बैठी देवी माय	88
61	ओ करुणाकर तुम्हारा ब्रज में फिर	44
32	ओ नर भोले कुछ कर बोले	32
179	ॐ आपदामपहर्तारं दातारं	94
05	क्यों कहते हो भगवान आते नहीं	20
45	कब मिलिहौ रघुनाथ हमारे	37
167	करले गुरु का ध्यान अमृत बरसेगा	88
71	करी गोपाल की सब होय	48
30	करु मन नन्दनंदन को ध्यान	30
04	कहाँ हो यशोदा के छैया	20
118	कोई कहियो री प्रभु आवन की	69
31	कोई कुछ माँगे, कोई कुछ माँगे	31
16	कौन गली गये श्याम सखी री	25
63	खड़े हम दर पर दर्शन को	45
60	खुल गये भाग हमारे गुरुजी	44
56	गजब का दावा है पापियों का	42
96	गोवर्धन गिरधारी जी टेर	61
86	घनश्याम आया री मेरे घर	55
57	घूँघट का पट खोल री	42
149	चरण कमल बन्दौ हरिराई	80
174	चले श्याम सुन्दर से मिलने को भोला	91
89	चलो रे मन गंगा जमना तीर	56
123	चाकर राखो जी महाने	70
101	चितैबो छोड़ दे री राधा	63
169	चौरासी घंटा बाजे री भवन चारों ओर	89
87	छलिया नन्द को हमें तो जोगनिया	55

150	छिप-छिप आये श्याम लेके	81
18	छिपे हो कहाँ कष्टहारी कन्हैया	26
80	छोटी छोटी गउँ छोटे-छोटे ग्वाल	52
49	जगदीश पर अगर ये तन मन निसार होता	39
64	जब तेरी मेहरबानी मेहरबाँ सारा जमाना	46
17	जमुना तट आये बिहारी लिये संग	25
07	जय कृष्ण हरे जय राम हरे	21
168	जय जय गिरिवर राज किशोरी	89
44	जय जय सुरनायक जन सुखदायक	37
72	जय राधे जय राधे राधे	48
173	जय शिवशंकर नमामि शंकर	91
175	जय शिव जय महाकाल	92
77	जय सीता राम, सीता राम	51
147	जसोदा हरि पालना झुलावै	79
171	जहाँ दिल में सफाई रहती है	90
38	जाहि लगन लगी घनश्याम की	34
95	झूम-झूम मनमोहन रे मुरली मधुर	61
90	डाके को डर लगे तुम्हें तो	57
75	तेरी बन जायेगी राम गुण गाये से	50
160	तुम्हें जानत नाँय, पहचानत नाँय	86
15	तुम तो घनश्याम जनम के कपटी	25
09	तुम बिन मोहे कल न परे	22
32	तुम मेरी राखो लाज हरी	31
132	तू दयालु दीन हौ	73
114	दरस बिना दूखण लागे नैन प्रभुजी	67
158	देखो री एक बाला जोगी	85
146	देखो सखी वृन्दावन में	79
142	नन्दजी के अँगना रे माई तेरे बधाई	77
01	नन्दलाल गुपाल दयाल हरी	19
36	नयना रे चित्त चोर बताबो	33
102	नवल वसन्त नवल श्री वृन्दावन	63
113	ना तो नाम को जी मँहँसू	67
120	नाथ मैं थारो जी थारो	69
134	पथरा पड़े बुद्धि इन्दर की आये	74

81	परम धन राधा नाम आधार	52
08	पलन लगी अखियाँ भरी	22
178	पशूनां पतिं पापनाशं परेशम्	93
116	पायो जी मैंने राम रतन धन पायो	68
20	पार करेगा नैया रे भज कृष्ण कन्हैया	26
53	पीले रे अब तू हो मतवाला प्याला	41
130	प्रभु जी मेरे अवगुन चित्त न धरो	73
73	प्रभु तेरो नाम जो ध्याये फल पाये	49
139	प्रेम मुदित मन से कहो राम	76
92	प्रेम से मिले हैं दोनों देह को	59
108	फागुन के दिन चार रे होरी खेल मना रे	65
145	फूलन मथुरा छाई कन्हैया जी	78
82	फूलों में सज रहे हैं	53
46	बतादे मन तू किधर ले जायेगा	38
133	बस में होते आये	74
127	बसिवौ वृन्दावन कौ नीकौ	72
156	बसो री मेरे नैनन में यह जोड़ी	84
107	बसौ मोरे नैनन में नंदलाल	64
97	बाँसुरिया कहाँ भूल आये	61
94	बिलइया रांड लपकी बचना रे साधो	60
55	बीत गये दिन भजन बिना रे	41
10	बोलो बोलो जी कन्हैया मोहन	22
144	ब्रज में बजत बधाई	78
128	ब्रजराज आज मनिहार बने	72
47	ब्रजराज कहीं यदुराज कहीं नित रूप	38
176	भक्त एक शिव का चला	92
13	भक्तों की लाज रखने भगवान	24
165	भगवान तेरी भक्ति में कोई ना सुखी	88
11	भजन बिना रे बीती जाये उमरिया	23
14	भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे	24
79	भज मन राम चरन सुखदाई	49
115	भज ले रे मन गोपाल गुना	68
69	भजो राधा रमण हरि गोविन्द जी	47
66	भजो रे भैया राम गोविन्द हरी	46

26	भारत में फिर से आजा गिरवर	28
98	मदन गोपाल शरण तेरी आयो	62
06	मदन मोहन जरा वंशी बजा	21
103	मदमातो छैला होरी को	63
18	मन केता समझाया रे पंछी बाबरिया	26
48	मन मतवाला जपू कैसे माला	38
129	मनिहार बन आये आप बनवारी	72
126	मनुवाँ राम नाम रस पीजै	71
67	मरना तेरी गली में जीना तेरी गली में	47
151	माई मेरे स्याम न संग ते जाये	81
106	माई री मैंने गोविन्द लीनो मोल	64
159	मार किलकारी चढ़े हनुमान	86
111	मीरा के प्रभु साँची दासी बनाओ	66
35	मुझे केवल आस तुम्हारी साँवरिया	33
29	मेरे भगवन मैं तेरे सहारे से	30
109	मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई	65
21	मेरी आस यही है हे भगवन्	27
79	मेरो गोपाल गिरधर जमाने से निराला है	52
12	मैं ढूँढ़ फिरी जग सारा	23
51	मैं तो भूल गई रे भजन तेरा करना	40
152	मैं तो हूँ भक्तन को दास	82
98	मोपे काहे को झुरत ब्रज नारी	62
65	मोरा मन दरपन कहलाये	46
154	मोहे दे दरसन गिरधारी	83
104	म्हारो प्रणाम बाँके बिहारी को	64
141	यशोदा के दोनों लाल दिन	77
148	यशोदा तेरे लाला ने माटी खाई	80
181	यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः	94
121	या ब्रज में कछु देख्यो री टोना	70
78	रघुपति राघव राजा राम	51
131	रघुबर तुमको मेरी लाज	73
137	रघुवीर मेरी सजनी प्यारा लगे	75
161	राजा हरिश्चन्द्र से बोले ऐसी बानी	86
135	रात सखी सपने में देखे दशरथ	75

93	राधा सूबेदार बनी	60
50	राम नाम धन पाया मैंने	39
140	राम नाम सुखधाम, राम नाम सुखधाम	77
76	रे मन मूरख जनम गँवायों	50
41	वदन विदारन दारुण हय वाहन ये	58
91	विनय मेरी सुन लेना	35
27	शरण में आये हैं हम तुम्हारी	29
182	श्री कृष्ण चन्द्र कृपालु भजु मन	95
180	श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन	94
70	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	48
54	साई नाम अनमोल मनुवा मन	41
42	साधो निर्धन के धन गिरधारी	36
122	सौवरिया मन भाया रे	70
03	सौवरे घनश्याम तुम तो	20
25	सुना है तारे हैं तुमने लाखों	28
138	सुनि आई रे भागवत गीता	76
136	सुनि गजरुदन नैन भर आये	75
39	सुने री मैंने निरबल के बलराम	35
125	सो मीराबाई काहे को साधा है योग	71
187	स्तुति देवी जी की	99
177	स्तुति श्री शिवजी	93
68	हमको मन की शक्ति देना	47
162	हरि की हरी जानकी नारी रे	87
40	हरि बोलो सबहिं मिल प्रेम सहित	35
110	हरी तुम हरो जन की भीर	66
43	हँसि पूछे जनकपुर की नारी नाथ	36
59	हे दयामय आप ही संसार के आधार	44
84	हे गोविन्द हे गोपाल	54
170	हे नाथ अब तो ऐसी दया हो	90
34	हे भगवन् बतादें मोहे मैं	33
112	हेरी मैं तो दरद दिवानी	66
24	हो रसिया मैं तो शरण बिहारी	28
143	हौं एक नई बात सुनि आई	78

दो शब्द

आदरणीय भक्तवर,

राधे-राधे! जय श्रीकृष्ण!

भजनों का यह संग्रह हमारी माँ भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता की हस्तलिखित डायरी से लिया गया है। उनका जीवन परिचय इस पुस्तक के अन्त में दिया है, जो शायद आपको प्रेरणादायक लगेगा।

सन् 1947 से लगभग 14 वर्ष की आयु से माँ इस डायरी में अपने प्रिय भजनों को लिख लेती थीं। अधिकतर भजन रसिक संतों की रचनाएँ हैं। इनमें से माँ ने कोई भजन स्वयं रचा हो, इसकी हमें जानकारी नहीं है। 10 अगस्त, 2013 को हरियाली तीज के दिन, श्रीधाम वृन्दावन में हमारे आवास 'भजन कुटीर' के बरामदे में उन्होंने यह डायरी मुझे दिखायी और कहा कि "मैं तय नहीं कर पा रही कि अपनी यह धरोहर किसे सौंपूँ।" मैंने सुझाव दिया कि अगर आपकी आज्ञा हो, तो स्कैन करवा कर इसकी कुछ कॉपी बनवा लेते हैं। उन्हें यह सुझाव पसंद आया और मैंने 5 कॉपी तैयार कर उन्हें दे दीं, जिन्हें उन्होंने अपने हस्ताक्षरों सहित अपने प्रिय पात्रों को बाँट दिया।

16 वर्ष तक निरन्तर ब्रजवास कर गत 3 अक्टूबर, 2013 को श्री कात्यायनी देवी के आविर्भाव दिवस पर श्रीधाम वृन्दावन में प्रातः बेला में उन्होंने पंडित श्रीअखिलेश जी से सम्पूर्ण भगवद् गीता का श्रवण कर, सेवाकुंज का चरणामृत, ब्रजरज, प्रसादी माला व चंदन ग्रहण कर अपना शरीर त्याग दिया।

अब उनकी इस अमूल्य धरोहर के उत्तराधिकारी वे सभी भक्तजन हैं, जिन्हें ठकुरजी से और श्री ब्रजधाम से प्रेम है। इसलिये हमने सोचा, क्यों न इसे पुस्तक रूप में छपवा लिया जाए? यह पुस्तक

इसी भावना का परिणाम है। इसमें हमारे सहयोगी श्री ध्रुव कृष्ण शुक्ल और श्री कुलदीप दीक्षित ने मनोबल बढ़ाया। ब्रज के प्रसिद्ध संगीताचार्य पं. बनवारी महाराज ने भजनों को सँवारने में और पूफ संशोधन में सहयोग किया। साथ ही वृन्दावन की सुप्रसिद्ध श्री हरिनाम प्रेस के डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया जी का विशेष सहयोग मिला है। मेरे ऐसे सभी सद्प्रयासों में मेरी धर्म पत्नी प्रो. मीता नारायण सदा ही उत्साह से सहयोग करती रही हैं। हम इन सभी के आभारी हैं।

अगर संकलित भजनों से आपको आनन्द मिले और आपकी भक्ति बढ़े, तो हमें असीम हर्ष होगा। इसके प्रकाशन में व्याकरण की या कोई अन्य त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए हम पूरी तरह उत्तरदायी हैं। आप अगर सुझाव भेजेंगे तो अगले संस्करणों में सुधार किए जा सकते हैं।

माँ द्वारा संकलित इन भजनों को पढ़कर या गाकर आप माँ के निकुंज लीला गमन के बावजूद उनकी आध्यात्मिक चेतना से जुड़ सकते हैं। इसी विश्वास के साथ माँ की यह अमूल्य धरोहर और उनका आशीर्वाद आपको समर्पित है। युगलजोड़ी सरकार आप पर कृपा करें। आप सभी के आशीर्वाद की याचना करते हुए ब्रज रज प्राप्ति की अभिलाषा में आपका अधम दास -

विनीत नारायण

vineetnarain.net

अध्यक्ष, द ब्रज फाउण्डेशन

9 दिसम्बर, 2013

brajfoundation.org

भजन कुटीर, शीतल छाया, रमणरेती, वृन्दावन (मथुरा) मोबाइल :

दूरध्वनि : 9927337222

ब्रजरज माहात्म्य

(माँ की निकुंज प्राप्ति के अवसर पर आयोजित महोत्सव में
ब्रजरज की महिमा पर ब्रज के परम श्रद्धेय
सन्तगणों के हृदयस्पर्शी उद्गार)

गहवर वन बरसाना के विरक्त संत श्री रमेश बाबा ने माँ के विषय में फोन पर मुझसे कहा कि, “वे भक्त ही नहीं, सन्त थीं। हम उनमें बहुत श्रद्धा रखते थे। उनके जाने का हमें बहुत दुःख है। उनकी सन्त निष्ठा, भगवत् निष्ठा व धाम निष्ठा बहुत गहरी थी। वे तुम्हारी ब्रज आस्था का आधार थीं।”

माँ के ब्रज रज प्राप्ति महोत्सव में बोलते हुए पूज्य कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज (रमणरेती, महावन) ने कहा कि, “भक्तिमती माया गुप्ता, लखनऊ विश्वविद्यालय की हमारी सहपाठी थीं। वे हमारी ब्रज चौरासी कोस यात्रा (1999) की भी सहयात्री थीं। उनका हम पर अधिकार था। इसलिए उनकी निकुंज प्राप्ति पर हम भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने आये हैं।” ब्रज रज के माहात्म्य पर प्रकाश डालते हुए महाराजश्री ने कहा कि, “लोग पूछते हैं कि अब ब्रज रज कहाँ हैं? ये धाम वही है ना, शास्त्र इसके प्रमाण हैं। साधारण जल में अगर गंगाजल डालोगे तो वह जल शुद्ध हो जायेगा और गंगाजल में साधारण जल मिलाओगे तो वह गंगाजल हो जायेगा। बिजली को छूने से जैसे दूसरे में बिजली चली जाती है। एक चुम्बक पर स्पर्श करता हुआ लोहा चुम्बक का रूप धारण कर लेता है। इसी तरह जो ठाकुर के समय की ब्रज रज हैं ना उसके ऊपर जितनी-जितनी रज पड़ती गई वही उतनी ही चार्ज होती गयी। और उस चार्ज होने के कारण ये ब्रज रज भी सौ प्रतिशत चार्ज हो गयी। इसलिए बहुत विस्मित होने की आवश्यकता नहीं है।”

मल्लकपीठाधीश्वर द्वाराचार्य श्रीराजेन्द्रदास जी महाराज ने कहा, “पूज्य माता जी ने निश्चित रूप से निकुंज में प्रवेश किया है और जो

निकुंज में प्रवेश करता है वह इस नित्य ब्रजधाम को छोड़कर कहीं नहीं जाता। इन्हीं लता-निकुंजों की ओट में छिपकर माता जी इस कथामृत का पान कर रही हैं। हम उन्हें नहीं देख पाते पर निकुंजवासी नित्य लीलाओं के साथ इस ब्रजधाम की सभी गतिविधियों पर अपनी दृष्टि रखते हैं।”

सुप्रसिद्ध भागवताचार्य श्री मनोज मोहन शास्त्री ने अपने उद्गार इसप्रकार व्यक्त किये, “परमात्मा प्राप्ति के चार साधन हैं- नाम, रूप, लीला और धाम। इन चारों में से एक का भी आश्रय ले लें तो परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। पूज्य माता जी ने तो चारों का ही आश्रय लिया। नाम, रूप, लीला और धाम। आज विनीत नारायण जी को देखकर माता जी की पुण्याई का सहज में अनुमान लगाया जा सकता है। माता जी ने ब्रज में वास किया और ब्रज की सेवा कैसे हो इसका संकल्प लेकर अपने पुत्र के अन्दर उनकी ही शक्ति बैठकर कार्य कर रही है। ब्रज में जीर्णोद्धार के ये जो कार्य चल रहे हैं और जो आगे भी होंगे, यह सब उन्हीं के आशीर्वाद का प्रतिफल है।”

वृन्दावन के प्रकाण्ड विद्वान् श्री रामकृपाल त्रिपाठी जी ने ब्रज रज की महिमा का बखान करते हुए कहा कि, “श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध में वर्णन आया है कि धर्म ने पृथ्वी से पूछा कि तुम क्यों रो रही हो ? तुम्हारा कोई प्रिय वियोगी वियुक्त हो गया है या संत ब्राह्मणों की दुर्दशा हो रही है या स्त्री, बालकों, वृद्धों की लोग रक्षा नहीं करते या ब्राह्मणों की सरस्वती खल पुरुषों के अधीन हो गई है, किसलिए रो रही हो, क्यों रो रही हो आप ? तो पृथ्वी माता कहती हैं कि मैं तो इसलिए रो रही हूँ कि मेरी धूलि के ऊपर जब भगवान् अपना चरण रखते थे, तो उसमें एक छपा बन जाता था, मुहर लग जाती थी, जब अंकुश और ध्वजा का चिह्न लग जाता था, तो मैं समलंकृतांगी, अलंकृत हो जाती थी, सौभाग्यवती हो जाती थी। उस अलंकार को पाकर तीनों लोकों का अतिक्रमण करके, मैं अपने को सुन्दर समझती थी। भगवान् से उस ऐश्वर्य को मैंने पाया और पा करके तीनों लोकों को अँगूळ दिखाया और कहा कि तुम मेरे सामने कुछ भी नहीं हो। पर अब तो भगवान् हमें भी छोड़कर चले गये, इसलिए मैं रो रही हूँ।”

मधुसूदन सरस्वती महाराज ब्रज की रज में लोटते हैं और कहते हैं कि प्रत्येक कण में एक श्याम एक श्वेत कण दिखता है। ये भी उन्हें तब दीखा जब उन्हें काशी में जा करके सिद्धि मिली। पहले उन्होंने ब्रज में ही तप किया और जब उन्हें दर्शन नहीं हुआ तो काशी चले गये और भैरव जी की आराधना करने लगे। क्योंकि वहाँ के कोटपाल हैं भैरव। जब तक वो प्रसन्न नहीं होते, भगवान् शिव का दर्शन नहीं होता और चालीस दिन के अनुष्ठान में जब कोटपाल का भी दर्शन नहीं हुआ तो उनके मन में विचार आया कि जिसका कोटपाल इतना कठोर है उसका राजा कैसे मिलेगा और यह संकल्प जैसे ही आया, तो पीछे से भोलेनाथ की आवाज आयी, मधुसूदन ! मैं तो उसी दिन से तुम्हारे पीछे खड़ा हूँ। तब मधुसूदन सरस्वती जी ने पूछा कि तुम क्यों पीछे खड़े हो, आगे क्यों नहीं आते ? आगे आवें कैसे, तुमने जो श्रीराधा कृष्ण का युगल नाम ब्रज में जपा है। उसमें तेज इतना है कि मेरा शरीर जलने लगता है। मधुसूदन सरस्वती महाराज कहते हैं कि उसके बाद जब मैं यहाँ आया तो प्रत्येक कण में राधाकृष्ण का दर्शन हुआ। यह उनका अनुभव था जो कल तक ये कहा करते थे कि एक ही तत्त्व है ब्रह्म। तब उनसे संतों ने पूछा कि कहीं तुमने कृष्ण का नाम ब्रह्म तो नहीं रख लिया। तो उनको विशेषण लगाने पड़े ‘वंशी विभूषित कराः’। जब देवर्षि नारदजी से पूछा गया कि तुमको भगवान् कहाँ मिले, तो नारदजी कहने लगे, मैंने सारे वेदों में भगवान् को ढूँढा लेकिन वे मुझे नहीं मिले। फिर मैं ब्रज में आया और यहीं मुझे उनकी प्राप्ति हुई। यह वह ब्रज रज है जहाँ गोपी अपने आँचल का एक झटका मारे तो सौ कृष्ण प्रकट हो जायें।

आनन्द वृन्दावन के अध्यक्ष ‘पूज्य महाराजश्री’ कहते थे, अरे ओ वेदान्तियो ! अद्वैतवादियो ! तुम्हारा ब्रह्म यशोदा के आँगन में बँधा पड़ा है, जाके छुड़ाओ उसको और लिखते हैं कि जब भगवान् बालकृष्ण ने ठुमक-ठुमक कर चलना सीखा तो एक दिन नन्द भवन के आँगन की चौखट पार नहीं कर पाये। यशोदा मैया से नहीं कहा कि पार करा दो। चौखट ऊँची थी, स्वयं पार करने लगे तो पेट के बल लटक गये। मैया-मैया चिल्लाने लगे। देवर्षि नारद तो भ्रमण करते ही हैं। उन्होंने यह दृश्य देखा तो कहा, वाह ! बस हो गया, बोले क्या हो गया ?

जिसको संसार का भय हो, वो वेद पढ़े, स्मृतियाँ पढ़े, महाभारत पढ़े। आज से हमने तो सब छोड़ दिया। मैं तो आज से नंद की वंदना करूँगा। उनसे पूछा नन्द में ऐसा क्या है? नारद जी ने उत्तर दिया, “जिसकी चौखट पर ब्रह्म लटक रहा हो, उस चौखट को छोड़कर, उस ब्रज को छोड़कर अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा।” इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि ब्रज की जितनी लौकिक महिमा है उतनी अलौकिक महिमा भी है। पर ब्रज रज की भी महिमा सन्तों के चरण स्पर्श से और भी बढ़ जाती है। क्योंकि भगवान् कहते हैं कि मैं अपने निष्काम भक्तों के पीछे-पीछे डोला करता हूँ जिससे उनके चरणों की रज उड़कर मुझ पर गिरे और मैं धन्य हो जाऊँ। ऐसी पवित्र रज में भक्तिमती माया गुप्ता जी विलीन हो गई। यही उनके सन्त होने का लक्षण है।”

ब्रज के सुप्रसिद्ध भागवताचार्य श्री देवकीनन्दन ठाकुर ने माता जी को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुये कहा कि, “ब्रज में निवास के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। यह वह स्थल है जहाँ स्वयं भगवान् श्रीराधाकृष्ण नित्य वास करते हैं। वही ब्रज में अंतिम समय हमारी नानीजी ने भी वास किया। ये बहुत छोटी बात नहीं है। मैंने ऐसे भी काफी संतों को देखा है जिन्होंने बहुत समय ब्रजवास किया लेकिन जब अन्त समय आया तो कहीं बाहर चले गए। ऐसा ही कुछ होता है कि उनको ब्रज में ये अधिकार प्राप्त नहीं होता। ब्रज में ही मिट्टी मिले ये बहुत बड़ी उपलब्धि है। मेरी तो वो नानी थीं। क्योंकि राया में मेरी ननसाल है वा रिश्ते से विनीत नारायण जी मेरे मामा लगे। ऐसी भक्त माँ के ही पुण्य प्रताप से मामा जी ब्रज फाउण्डेशन के माध्यम से ब्रज सजाने के अभियान में लगे हैं। उन्हें मेरा तन-मन-धन से पूरा सहयोग समर्पित है। यही नानीजी को मेरी श्रद्धांजलि है।”

बरसाना के गहवर वन की भागवताचार्य बृजबाला सुश्री मुरलिका शर्मा ने विरक्त संत श्री रमेश बाबा के प्रतिनिधि के रूप में ब्रज रज माहात्म्य गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा, “आज का यह कार्यक्रम तो माता जी की ही इच्छा से हुआ। उन्होंने अपने को निमित्त बनाकर ब्रज के महत्व को प्रकट किया है। माताजी को हम दादी अम्मा कहा

करते थे। वो हमें बहुत प्यार देती थीं। दो-तीन महीने पूर्व जब उनसे अन्तिम बार मिलन हुआ तब उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। हमने कहा कि आप दिल्ली चली जायें और वहाँ थोड़ा उपचार कराकर पुनः ब्रज में आ जाइये। तो माता जी ने कहा कि लाली या बात कूँ दोबारा मत कहियो। अब जितनी श्वास शेष हैं वे भी यहीं बीत जाएँ, बस यही इच्छा है। अब मैं ब्रज छोड़कर नहीं जाऊँगी। उनकी इस भावना को श्रीराधारानी ने स्वीकार कर लिया। ब्रज में ही उनका शरीर छूटा। हमारे पूज्य बाबा महाराज द्वारा रचित एक बहुत ही सुन्दर पद है। प्रायः बाबा महाराज याकू गायो करें-

ब्रज की रज में धूर बनूँ मैं, ऐसी कृपा करो महाराज,
धूर बनूँ हरी चरणन लागूँ, उड़ उड़ के अंगन में पागूँ।
बार-बार यही वर माँगूँ, मोपै विहरे श्याम राधिका,
मेरे सब दुख जावें भाज, ऐसी कृपा करो महाराज ॥

माता जी की ऐसी ही निष्ठा को राधा रानी ने पूर्ण करके दिखाया।

ब्रज की रज कृष्ण को प्यारी, माटी खायी कृष्ण मुरारी,
धमकावें यशोदा महतारी, माखन दूध दही तज रोवें,
रज खावन के काजै।

माता बार-बार निषेध करै, पर लाला नाय मानै। बार-बार या रज कूँ खावै। भइया या ब्रज रज में ऐसौ कहा है? इसकी प्राप्ति साक्षात् कृष्ण की प्राप्ति है। नाम, रूप, गुण, लीला, धाम में कोई भेद नहीं है। मत्स्यपुराण में कहा है-

‘राधा वृन्दावने-वने’ प्रिया जी और प्रियतम जब विहार करें, तो या विहार की बहुत सी अवस्था होवें। वा अवस्था में एक जाइय अवस्था होवै। जामें श्रीजी और ठाकुर जी अनुराग में ऐसे भर जायें। जहाँ श्रीजी और ठाकुर जी को जो श्रीबपु है वह जड़ता कूँ प्राप्त है जाए। मत्स्य पुराण में यह कहा है कि एक बार श्रीजी और ठाकुर जी विहार कर रहे थे, और जो श्रीबपु है वह जड़ बन गयो और वही जड़ बपु ही वृन्दावन धाम है। वृन्दावन की प्राप्ति ही साक्षात् श्री राधारानी की प्राप्ति है। श्रीजी कौन के ऊपर कितनी कृपा वृष्टि कर रही हैं याको

एक ही लक्षण है, एक ही पहचान है, कि भक्त का शरीर ब्रज में छूटे। मध्ययुग के ब्रज के रसिक संत रहे श्रीहरिराम व्यास जी ने कहा है -

श्री राधे रानी मोहे अपनी कर लीजै,
और कछु मोही भावत नाहीं, वृन्दावन रज दीजै।
खग, मृग, पशु, पंछी या वन के, चरण शरण रख लीजै।
व्यास स्वामिनी की छवि निरखत महल टहलनी दीजै।

या पद की अन्तिम पंक्ति सौं एक बात याद आई। यहाँ चित्र लगौ भयो है श्री मदनमोहन ब्रजवासी जी को। उनकी भी अंतिम इच्छा यही ही। वे नित्य सोहनी (झाड़ू) लेकर श्री मानबिहारी के मंदिर परिसर की सीढ़ियन कूँ झाड़ो करते और एक ही पद गायो करते। महल राधिका का बुहारा करेंगें, उन्हें आते-जाते निहारा करेंगे। यही उनकी अंतिम इच्छा थी कि मंदिर प्रांगण का मार्जन करते-करते मोकूँ राधामाधव की प्राप्ति है जाए। श्री ठाकुर जी उन्हें ऐसो ही स्वीकार कर लें। और देखो श्रीजी ने उनके याही भाव कूँ पूर्ण कियो। वे श्री माता जी की तेरहवीं में (14 अक्टूबर 2013) यहाँ वृन्दावन पधारे हे और अगले दिन भोर में 7:30 बजे गहवर वन में, मान मन्दिर की सीढ़ियन पै हाथ में सोहनी लिए मार्जन कर रहे हे, वाही अवस्था में श्रीजी ने उन्हें अपनी गोद में लै लियो। जाकी जैसी भावना होए वा भावना कूँ आराध्य अवश्य पूर्ण कियो करें। तो ऐसी ही पूज्य माता जी की भी भावना ही जाकी भी पुष्टि करी श्री राधामाधव जुगल सरकार ने। भइया या रज की महिमा श्री छीत स्वामी जी ने कही है-

अहो विधिना तोपै अचरा पसार माँगूँ,
जनम जनम मोहे दीजो यही ब्रज बसिबो।

‘वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनां’ या वृन्दावन की रज में जन्म मिल जाय, चाहे वह किसी भी रूप में चर, अचर, वस्तु, पदार्थ आदि जो भी रूप होय। गायो करें कि वृन्दावन में मंजुल मरिबो। पर यह मरिबो भी इतनो आसान नहीं है। श्रीजी जापे कृपा करें वाही कू यह कृपा मिले है, अन्यथा असंभव है। बिलकुल असंभव है। रज की प्राप्ति के लिए हमारे शतककारन ने जाने क्या-क्या कहे हैं। जहाँ तक हमारी मति-गति भी नहीं पहुँच सकै, वाकूँ सुनके बड़ो विस्मय होयो करे। एक शतककार ने तो यहाँ तक कहे हैं कि जब कोई या

ब्रजरज में शरीरांत करे, अपनो प्राणांत करे, तो श्रीजी ठाकुर जी नित्यधाम में बैठके परस्पर वाकी चर्चा करो करें। जो रज में रह रह्यो है वाकी चर्चा, जाने ये दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली होय कि अब मैं यही रहूँगो और मृत्युपर्यंत यही रहूँगो, वाकी चर्चा स्वयं श्रीजी ठाकुर जी सौं कियो करें। श्रीजी पूछें ठाकुर जी से, “हे प्रियतम! जो भक्त ब्रज में वास कर रह्यो है वाने कछु पायो कै नाँय पायौ। वो कैसे रह रह्यो है? कौन सी वृत्ति कूँ अपनाय कै रह रह्यो है?” तो ठाकुर जी कहें, “स्वामिनी जी! आप चिन्ता मत करौ। वो आपको भक्त पूर्णरूपेण स्वस्थ है। यदि आप चाहौ तो वाकूँ निभृत निकुंज कौ दर्शन अभी प्राप्त करा सकौ।” तौ श्रीजी और ठाकुर जी भी ब्रज में रहने वालों की चर्चा कियो करें।

भइया या ब्रज रज की महिमा के बारे में एक बात और कहेंगे। आद्याचार्य श्री शंकराचार्य जी महाराज, जिनके द्वारा ‘प्रबोध सुधाकर’ ग्रन्थ में बहुत स्पष्ट रूप से कृष्ण महिमा खोली गयी है, जब वे भारत भ्रमण करने के लिए निकले तो आचार्यपाद का यह नियम था कि वे जहाँ जाते वहाँ की भूमि का खनन किया जाता, फिर मार्जन किया जाता, फिर उसे सिंचित किया जाता। तब आचार्यपाद उस पर आसीन होते। जब ब्रज समीप आने लगा तो उन्होंने शिष्यों से कहा अब भूमि का खनन मत करो। अब केवल मार्जन कर दो, जल से सिंचन कर दो। फिर ब्रज के समीप आये तो बोले भैया, अब जल सिंचन भी रहने दो, केवल मार्जन कर दो। जब आचार्यपाद ने ब्रज में प्रवेश किया तो जल सिंचन, मार्जन आदि सब बन्द करवा दिया। शिष्य बड़े आश्चर्य में पड़ गये और बोले आचार्यचरण आप ये क्या कह रहे हो। न भूमि खनन, न मार्जन और न ही सिंचन, आप कैसे यहाँ आसीन होंगे? आचार्यचरण ने कहा, भैया तुम ये जानो ये कौन सी रज है। ये ब्रजरज है। फिर वहाँ उन्होंने बड़ा सुन्दर गोविन्द अष्टक गाया। अरे ये वो ब्रज है जहाँ परमब्रह्म भी आके छाती के बल लोटते हैं। ब्रज की कीचड़ में छाती के बल घूमा करें। कभी अपने चरणों में पादुका भी धारण नहीं किया करें। ये वो चरणरज है। ये वो ब्रजरज है, जिसके स्पर्श के लिए बड़े-बड़े देवता भी लालायित रहते हैं।

यहां मंच पर हमारे वीरबाबा का भी चित्र लगा है। वे भी बड़े रसिक संत थे, ब्रज के प्रति बड़ी निष्ठा थी। इन्होंने भी अपनी अंतिम श्वाँस ब्रज में ही पूरी की। इनको एक पद बड़ा प्यारा था। जब भी बाबा महाराज या पद कूँ गायो करते तो वे आपे से बाहर हो जाते। अत्यन्त प्रसन्न होते। वो पद है-

आधो नाम तारिहैं श्री राधा,
रा के कहे रोग सब मिटिहैं और धा के कहे मिटें भव बाधा।

ऐसे निष्ठावान हे वीरबाबा कि समय ते पहले ही ठान लियो कि राधा रानी के पास जानो है और चले गये। श्रीजी के अनन्य निष्ठावान भक्तन में शायद ही ऐसो हटी कोई होय। जिन-जिन ने ब्रज रज में निष्ठा करी, ब्रज रज में जिनको भाव हो, वा भाव की पूर्ति श्री राधा रानी करें हैं। याही निष्ठा के साथ हम लोगों को भी प्रार्थना करनी चाहिए। जैसी कृपावृष्टि हमेशा महापुरुषों पर होती रही है हमको भी श्रीजी योग्य बनायें और ऐसी कृपावृष्टि हमारे ऊपर भी करें।

वृन्दावन के श्रीराधारमण मंदिर के गोस्वामी श्री पद्मनाभ गोस्वामी जी ने कहा कि “मां भक्ति और करुणा की साक्षात् मूर्ति थीं।”

वृन्दावन के प्रकाण्ड पण्डित डॉ. अच्युतलाल जी भट्ट का कहना है कि “आपकी माँ विदुषी थीं, भागवत व गीता की मर्मज्ञ थीं और प्रायः मेरे पास अनेक श्लोकों के रहस्यमय अर्थों की चर्चा करने आया करती थीं। एकबार मथुरा में भगवद् गीता गोष्ठी में उन्होंने जो वक्तव्य दिया उसे सुनकर तो समस्त संत समाज और श्रोता उनके गीता-ज्ञान को जानकर हतप्रभ रह गये।”

ऐसे ही उद्गार ब्रज के अनेक सम्मानित संतों और ब्रजवासियों ने माँ के विषय में व्यक्त किए हैं।

नोट- ब्रज कोकिला श्री मदन मोहन ब्रजवासी जी व बरसाने के श्री वीर बाबा का पूज्य माताजी व विनीत नारायण में बड़ा स्नेह था। इसलिए इस गोष्ठी में माताजी के साथ ही उनके व सेवाकुंज के श्रीगोपालदास बाबा लघु सखी के चित्र भी लगाये गए थे।

माँ के नीलमणि गोपाल

ने किये उनके जीवन में

अनेक चमत्कार

(माँ के पुराने कागजों में मिला उनका यह हस्तलिखित लेख)

मेरा बचपन लखनऊ में बीता था। मैंने बचपन में ही श्रीकृष्ण भगवान का एक चित्र खरीदा था, उसे मैंने अपने पढ़ने की मेज के ऊपर दीवार पर टांग रखा था। मुझे उन पर कोई विश्वास था ऐसा मुझे याद नहीं। पर मुझे उनसे कुछ आत्मीयता का सा भाव रहता था। उस चित्र पर ‘मनोहर गोपाल’ छपा था। पर मैं उन्हें नीलमणि गोपाल आदि नामों से याद करती थी। 1951 में मेरी बी.ए. की परीक्षा थी। उन दिनों हमारी पढ़ाई तो महिला विद्यालय में होती थी, पर परीक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में देने जाना था। पहले पेपर से पहली रात्रि में मैं देर तक पढ़ती रही। फिर सुबह जाने के लिए आवश्यक चीजें सहेजने लगी। तभी मेरा प्रवेश पत्र (एडमिशन कार्ड) नहीं मिला। उसके बगैर मुझे परीक्षा भवन में अंदर जाने की अनुमति किसी प्रकार भी नहीं मिलती। पहला पेपर और विश्वविद्यालय का नया माहौल, मुझे घबराहट शुरू हो गई। धीरे धीरे मैंने अपना सारा कमरा उलट-पुलट कर डाला। एक-एक कॉपी किताब में देख डाला हर सम्भावित जगह में ढूँढा मगर वह नहीं मिला। यह सब करते करते काफी रात हो चुकी थी। घर के सब लोग सो रहे थे। क्या करूँ, किससे कहूँ, समझ में नहीं आ रहा था। मैं सोचने लगी हे भगवान! क्या मेरी सालभर की मेहनत बेकार चली जायेगी। तभी अचानक मेरा ध्यान गोपालजी की तरफ गया। मैंने उनसे कुछ मांगा तो नहीं, पर उनको देखकर मेरी आंखों में आंसू आ गये। तभी मेरे दिमाग में विचार आया, मैंने सब

कुछ तो देख लिया पर मेज के नीचे रखी रद्दी की टोकरी को तो देखा नहीं। यद्यपि मैंने सोचा कि इतने महत्व का कागज रद्दी में कैसे हो सकता है। फिर भी मैंने फौरन टोकरी पलट डाली और एक एक कागज के टुकड़े को देखने लगी। कुछ क्षणों में ही वह प्रवेश पत्र मेरे हाथ में आ गया। यह था मेरा गोपालजी के साथ पहला अनुभव।

मेरे जीवन में अनेकों उतार चढ़ाव आये। मुझे याद नहीं कि मैंने गोपालजी से कुछ मांगा हो। पर मुझे हमेशा इस बात का अहसास रहता था कि गोपालजी मेरे हैं और सदा मेरे साथ हैं। हां कोई भी नया काम शुरू करने से पहले (जिस काम को करते समय गलत हो जाने की आशंका रहती थी) मैं उन्हें अवश्य याद करती थी।

2. अब मैं एक और महत्वपूर्ण घटना लिखना चाहती हूं जो मेरे जीवन में घटी है। बचपन से ही मेरे सिर में दर्द की शिकायत रहती थी। 1953 में शादी हो जाने के बाद सिरदर्द तेज होने लगा। सप्ताह में एक दो बार अवश्य ही मुझे तेज दर्द होता था। मैं सिरदर्द की गोली ले लेती। फिर कुछ समय बाद वह ठीक हो जाता। कुछ वर्षों बाद मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि जब भी मुझे चाय पीने में देर हो जाती है मुझे अवश्य ही सिरदर्द हो जाता है। सुबह सात बजे तक और शाम को चार बजे मुझे चाय न मिले तो मेरी हालत खराब हो जाती थी। बाद में तो डॉक्टर ने बताया कि माइग्रेन है। मुझे उलटियां होने लगतीं और सिर फट जायेगा, ऐसा लगता। कई बार डॉक्टरों के पास जाना पड़ता। उन्हीं दिनों मुझे विचार आता था हे भगवान! तुमने मुझे चाय का गुलाम बना दिया है। क्या मैं चाय की गुलामी से मुक्ति नहीं पा सकती। मेरे दो बच्चों की शादियां हो चुकी थीं। कुछ समय गांव में समाजसेवा करने जाती थी और कुछ समय श्रीमद्भागवत कथा सुनने में व पढ़ने में लगाती थी। हम लोग मुरादाबाद में रहते थे। अबसे लगभग 20 वर्ष पहले की बात है मुरादाबाद के पास अमरोहा में संत प्रवर श्री डोंगरे जी महाराज की भागवत कथा का आयोजन हुआ। हमारे कुछ साथियों ने एक बस तय की जो सात दिन तक सुबह रोज हमें अमरोहा कथा में ले जाती थी व शाम को हम वापिस आते थे।

कथा के बीच में एक बार डोंगरेजी महाराज ने कहा कि “तुम संसारी लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह क्या छोड़ोगे, तुम तो चाय, बीड़ी, सिगरेट तक नहीं छोड़ सकते”। सुनकर मुझे लगा कि यह मेरे लिये ही कहा गया है। संयोग की बात है कि अलगे ही वर्ष मुरादाबाद में भी कथा होगी यह तय हुआ। मैं मन में बराबर विचार करती रही कि यदि मेरी चाय आगामी कथा होने तक किसी प्रकार छूट जाय तो मैं बिना चाय पिये डोंगरेजी महाराज की कथा सुनूं। 12 सितम्बर से कथा होनी थी। 5 सितम्बर की सुबह मैंने चाय नहीं पी, सोचा तबीयत खराब होगी तो हो जायेगी, आज चाय नहीं पियूंगी। उस दिन सारा दिन मैं इंतजार करती रही, अब मुझे तेज सिरदर्द होगा, अब उलटियां शुरू होंगी, पर शाम चार बजे तक कुछ नहीं हुआ। फिर मैंने शाम की चाय भी नहीं पी और रात तक मैं ठीक रही। अब तो मुझे लगने लगा कि बिना चाय पिये कथा सुन सकती हूं और गोपालजी की कृपा से ऐसा ही हुआ, मैंने कथा सुनी। पांच सितम्बर सन् शायद 1989 ही था, के बाद मैंने कभी चाय नहीं पी। साथ में कॉफी भी चाय की बहन है, वह भी नहीं पी। आश्चर्य की बात यह हुई चाय तो मेरी छूट ही गई, साथ ही गोपालजी की कृपा से तब से मेरा माइग्रेन बिल्कुल ठीक हो गया। साल में एकाध बार किसी विशेष कारण से मामूली सिरदर्द हो जाता है, अन्यथा तो मैं ठीक ही हूं।

जीवन में दुख सुख तो आते जाते रहते हैं, पर यदि यह विचार बना रहे कि हम उसकी शरण में हैं, वह जो भी करेंगे, हमारे भले के लिए ही होगा, तो जीवन की राह सहज हो जाती है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

मैं इस विचार पर चलने का प्रयास करती हूं।

3. लगभग सन् 1982-83 की बात है मैंने एक शिविर के लिए माउन्ट आबू जाने का प्रोग्राम बना रखा था। पर 3-4 महीनों से मेरे बायें घुटने में काफी दर्द था। मैं लंगड़ाकर चलती थी। कई तरह की दवायें ले रही थीं। हमारे वैद्यजी ने कहा कि फरवरी का महीना है। पहाड़ पर वैसे भी ठंड होगी। आपकी तकलीफ बढ़ सकती है। मेरे पति

ने भी कहा कि परेशान हो जाओगी, मत जाओ। पर गोपालजी की इच्छा से मेरा जाना तय हुआ। एक मित्र की बेटी रीना को साथ लेकर आबू पहुंची। पहुंचने पर शिविर से पहले इच्छा हुई कि थोड़ा घूमकर शहर देख लें। यद्यपि घुटने का दर्द बराबर होता रहा। पर फिर भी हम दोनों बाहर निकले। एक जगह पर किसी ने बताया कि ऊपर पहाड़ पर 'आधार देवी' का मन्दिर है। लोग 'अर्बुदा देवी' भी कहते हैं। मैंने सोचा हम इतनी दूर आये हैं, पता नहीं दोबारा यहां आने का अवसर मिले न मिले। मैंने रीना से कहा चलो ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हैं। उसने कहा कि 'आन्टी काफी सीढ़ियां हैं, आप नहीं चढ़ पायेंगी।' मैंने कहा कि चलते हैं देवी चाहेंगी तो दर्शन हो जायेगा। मैं एक-एक सीढ़ी पर रुक रुक कर बहुत देर में ऊपर चढ़ पाई। ऊपर जाकर हमने दर्शन कर देवी को धन्यवाद दिया। कुछ देर वहीं आराम किया और फिर हम नीचे उतरने के लिए चलने लगे। तभी रीना बोली 'अरे! आन्टी आप तो सीधे चल रही हैं', मैंने पैरों की तरफ देखा। अरे वाह! सचमुच मैं तो सीधे चल रही हूं, घुटने का दर्द ऐसा हो गया, जैसे कभी था ही नहीं। फिर तो मैं आराम से नीचे उतर आई। आबू का 4-5 दिन का प्रवास आनंद से बीता। लौटकर घर जाने पर सबको बेहद आश्चर्य हुआ महीनों से जो दर्द कितने इलाज के बाद भी ठीक नहीं हुआ, वह एकदम कैसे ठीक हो गया, वैद्यजी भी चकित थे। मैंने तो उस दिव्य शक्ति नीलमणि गोपाल की कृपा ही माना।

4. एक और घटना उन्हीं वर्षों में घटी थी। मेरे पति को अहमदाबाद में जरूरी काम था। लौटते समय हम अजमेर में दो दिन के लिए रुके। वहां मेरे जेठजी सपरिवार रहते थे। अजमेर में कई दर्शनीय स्थान देखकर हमने ख्वाजा जी की दरगाह के दर्शन करने का प्रोग्राम बनाया। मेरी जिठानी ने बताया कि उन्हें पता चला है, वहां बहुत भीड़ होगी। हमने सोचा कि भीड़ है तो क्या हम भी दर्शन कर लेंगे। मैं, मेरे पति, जिठानी, उनकी बेटी और बेटा, हम पांच लोग गए। बेटा तो मुख्य द्वार के बाहर ही जूते चप्पलों की रक्षा के लिए खड़ा हो गया। हम चारों अंदर गये। अंदर बड़े देगों को देखकर हम दरगाह के द्वार

पर पहुंचे। भीड़ बहुत थी, फिर भी हम दरगाह के मुख्य दरवाजे से अंदर घुसे। वहां जगह कम और भीड़ बहुत ज्यादा। साथ ही मजार पर चादर चढ़ाने वालों के रेले के रेले अंदर घुस रहे थे। इतनी भीड़ थी कि हमारा दम घुटने लगा। न आगे बढ़ सकते हैं, न पीछे लौट सकते हैं। भीड़ के कारण मजार की तो एकाध झलक ही दिखाई थी, पर लगा कि अब प्राण निकल जायेंगे। तभी मैंने ऊपर छत की तरफ देखा, मुझे मेरे गोपालजी की वही छवि ऊपर दिखाई दी। उसी क्षण एक बलिष्ठ मुसलमान युवक ने मेरे पति का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचा, मेरे पति का एक हाथ जिठानी की बेटी प्रभा ने पकड़ रखा था, उसका दूसरा हाथ मैंने पकड़ा हुआ था। जिठानी का हाथ पता नहीं कब मेरे दूसरे हाथ से छूट गया था। हम सबने एक-दूसरे का हाथ बहुत मजबूती से पकड़ रखा था। जब मेरे पति उस युवक के खींचने से खिंचे तो हम दोनों भी साथ खिंचे चले गए। कुछ ही क्षणों में वह बायीं तरफ के एक दरवाजे से हमें बाहर निकाल ले गया। हमें पता नहीं था कि कोई और भी दरवाजे वहां होंगे। हम तो पहली बार वहां गए थे। बाहर निकलते ही वह युवक बोला कि आप यहां कहां लेडीज को साथ लेकर आ गए। जब तक मेरे पति कुछ कहते मैंने कहा कि हमारे साथ एक महिला और थी, पता नहीं वह कहां छूट गई हैं। अगर अंदर होंगी तब तो उनके बचने की कोई आशा नहीं है, जरूर कुचल गई होंगी। जरा अंदर जाकर पता करिये। वह फौरन फिर दरगाह में घुस गया। थोड़ी देर बाद आकर बोला अंदर कोई महिला नहीं है। कहकर पता नहीं किधर निकल गया। हम उसे धन्यवाद भी नहीं दे पाये। कुछ दूर जाकर हमने देखा कि मेरी जिठानी एक तरफ खड़ी हैं। उन्होंने कहा कि मैंने तो इतनी सारी भीड़ देखकर अंदर घुसने की हिम्मत नहीं की। उस दिन सचमुच मैंने प्रत्यक्ष देखा कि मेरे गोपालजी सदा मेरे साथ हैं। हमें जीवन में कितनी बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। उस समय भी वो ही हमें सहारा देते हैं। सहन करने की शक्ति देते हैं, वह सदा हमारे साथ होते हैं।

मेरी दीदी

हम चार बहनें व दो भाई थे। माया दीदी तीसरे नम्बर की थीं। उनसे बड़े एक भाई व सबसे बड़ी बहन का विवाह काफी कम उम्र में हो गया था। दीदी शुरू से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि, मेधावी और पढ़ाई में तेज थीं। उनकी लिखाई सुन्दर थी। हमारे बाबाजी उनसे नुस्खे व अचारों की विधियाँ लिखवाते थे। मेरी सबसे पुरानी स्मृतियों में वह दादी अम्मा को गीता, रामायण, महाभारत आदि नियमित पढ़कर सुनाया करती थीं।

कॉलेज के दिनों में काफी प्रो-एक्टिव थीं। कहानी, लेख आदि लिखती थीं। उस समय वह कम्यूनिस्ट विचारधारा से प्रभावित थीं। फिर उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. किया। संस्कृत में डिबेट्स में व नाटकों में भाग लिया करती थीं। लखनऊ आकाशवाणी से प्रसारित संस्कृत नाटकों में भी उन्होंने 2-3 बार भाग लिया था। बाद में वह सर्वोदय से जुड़ी थीं। तब संत विनोबा भावे जी के पवनार आश्रम में जाकर समाज सेवा करती थीं। लगभग उसी समय से उन्होंने स्वर्णाभूषणों का सर्वथा परित्याग कर दिया। वो बड़े शिक्षाविद् की पत्नी थीं कदाचित् इसी कारण शिक्षा क्षेत्र में योगदान करने का उन्होंने संकल्प लिया तथा पिछड़े वर्ग की महिलाओं एवं बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से स्कूल खोला।

बचपन में उन्हें गुड़ड़े-गुड़ियों से खेलने का शौक था। यह कोई विशेष बात नहीं है क्योंकि प्रायः सब लड़कियाँ गुड़ियों से खेलती हैं। विशेष यह है कि वह कपड़े की गुड़िया स्वयं बनाती थीं। उनके लिए सुन्दर कढ़ाई-पेंटिंग आदि से वस्त्र बनाती थीं। वह हर कार्य में दक्ष थीं। उनके विपरीत मैं बचपन में पढ़ाई में कमजोर थी। अतः कुछ हद तक हीन भावना से ग्रस्त थी। यह दीगर बात है कि बाद में मैंने पी-एच.डी. की और उस समय दीदी ने मुझे बड़ी प्रेरणा दी। मुझमें संगीत सीखने की क्षमता है, इस बात को उन्होंने ही पहचाना व इसके लिए घर के बड़ों को प्रेरित कर मेरा भातखण्डे संगीत विद्यालय, लखनऊ में प्रवेश कराया। वह पग-पग पर मेरी निगरानी रखतीं।

मैं नियमित अभ्यास करूँ तथा मेरी संगीत शिक्षा निर्विघ्न चलती रहे, इसमें उनका बड़ा भारी सहयोग रहा।

जीवन के अन्तिम 3-4 वर्षों की अवधि में मेरा उनके साथ काफी समय व्यतीत करने का संयोग बना। तब मैंने अनुभव किया कि यद्यपि शारीरिक रूप से वह अस्वस्थता के कारण कमजोर थीं किन्तु मानसिक व आध्यात्मिक रूप से वह कितनी सशक्त थीं यह देखकर आश्चर्य होता है। अन्तिम क्षण तक वह अपने निर्णय पर अडिग बनी रहीं।

उनकी आत्मा को शत-शत नमन।

छोटी बहन - मधु गुप्ता



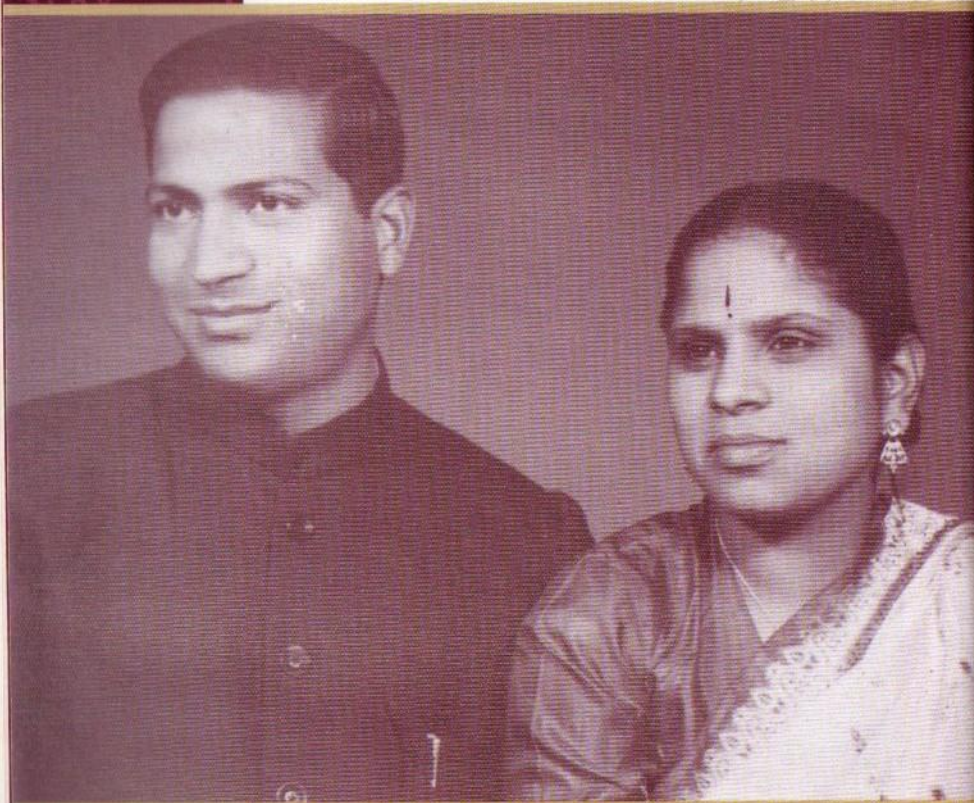
भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता के आराध्य
श्रीश्री नीलमणि गोपाल



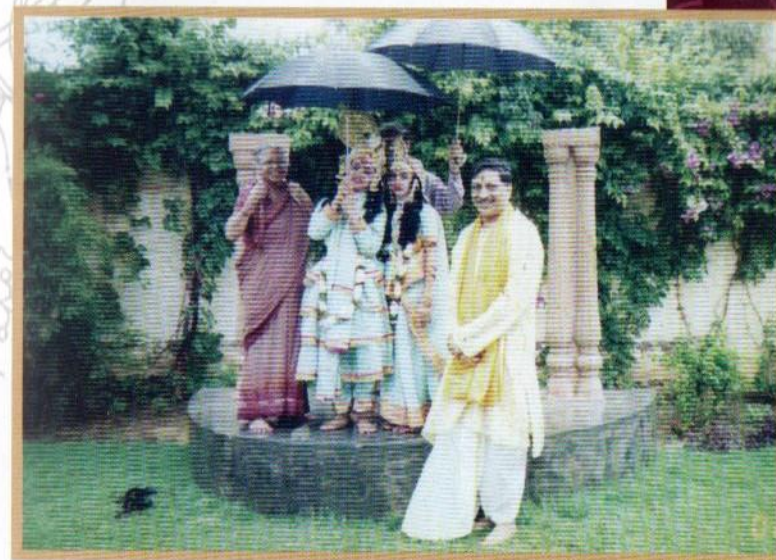
भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता द्वारा सेवित
श्रीश्री युगलजोड़ी सरकार



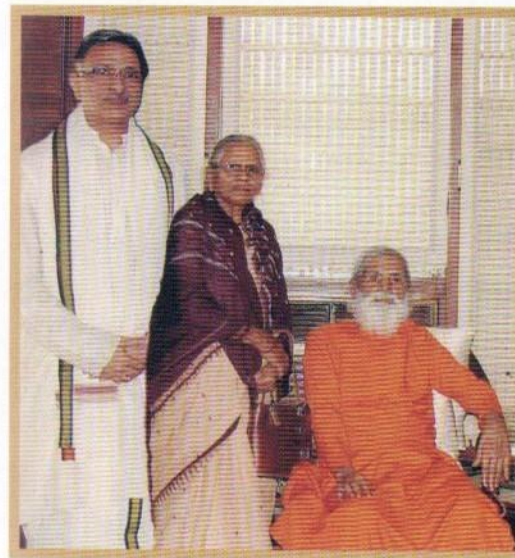
भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता
1933 – 2013



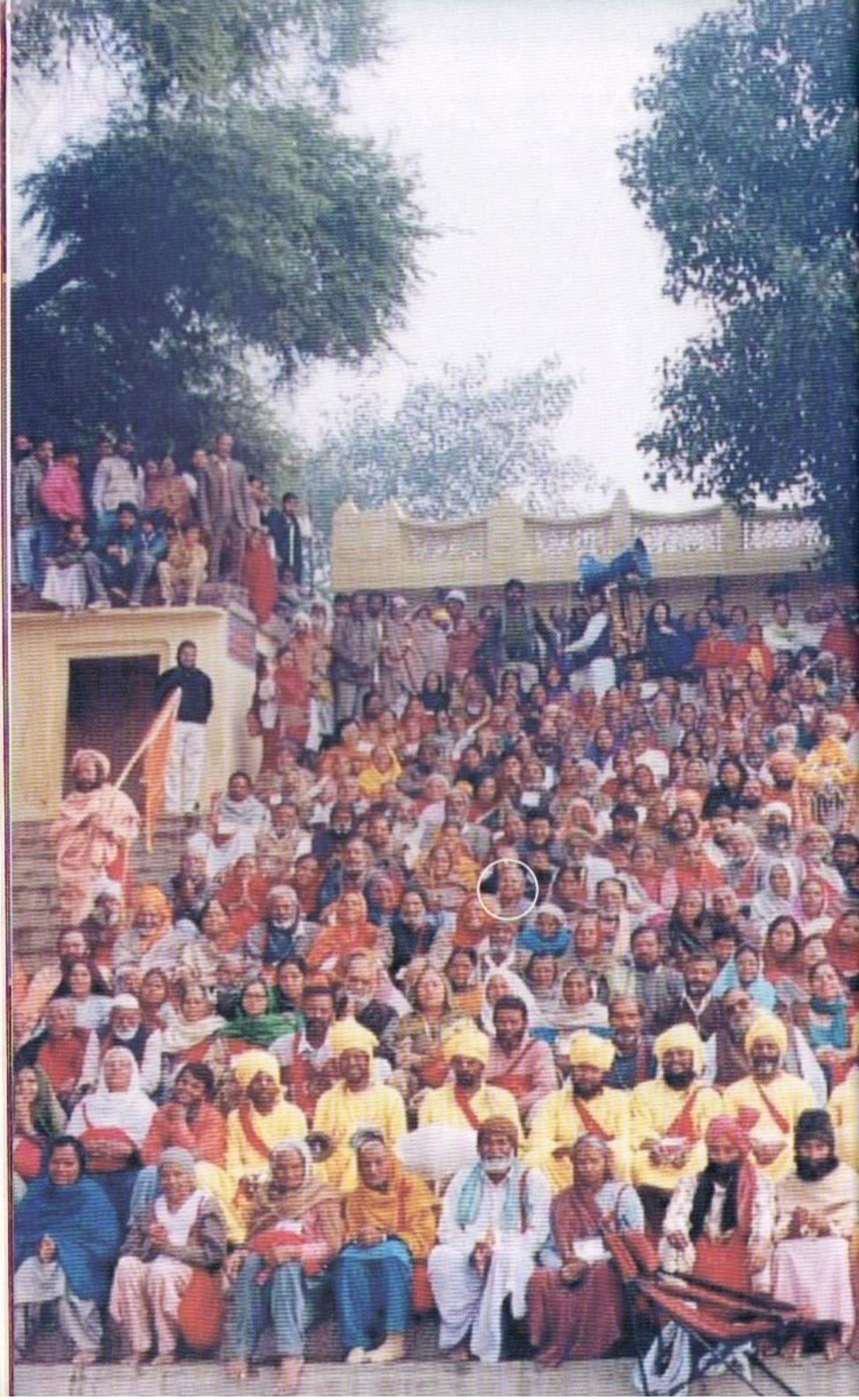
अपने पति डॉ. आर. एन. गुप्ता के साथ भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता - 1962



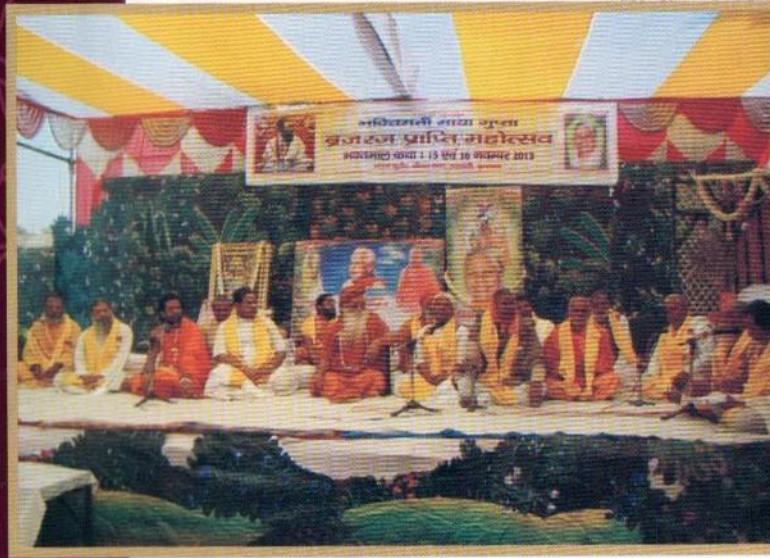
रासबिहारी युगलसरकार के साथ अपने वृन्दावन आवास भजन कुटीर के उपवन में भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता एवं ज्येष्ठ पुत्र विनीत नारायण



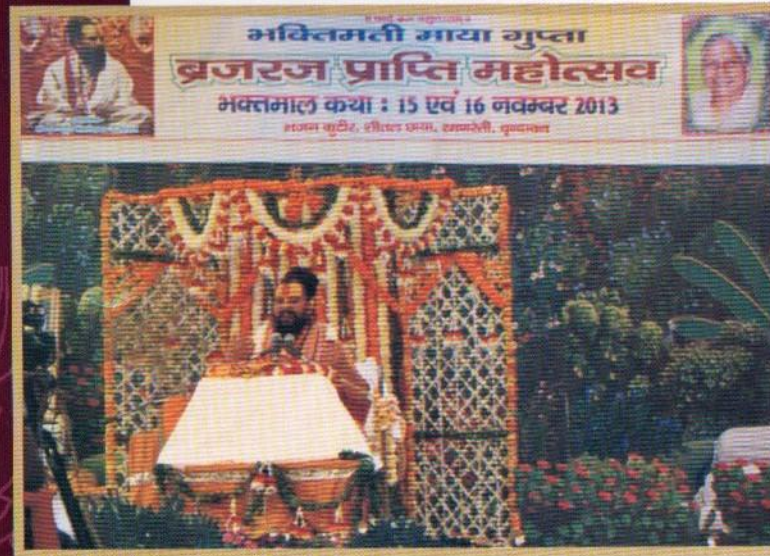
परमपूज्य गुरुदेव श्रीसत्यानन्द जी महाराज (कृपा विलास, वृन्दावन) के श्रीचरणों में भक्तिमती श्रीमती माया गुप्ता एवं विनीत नारायण



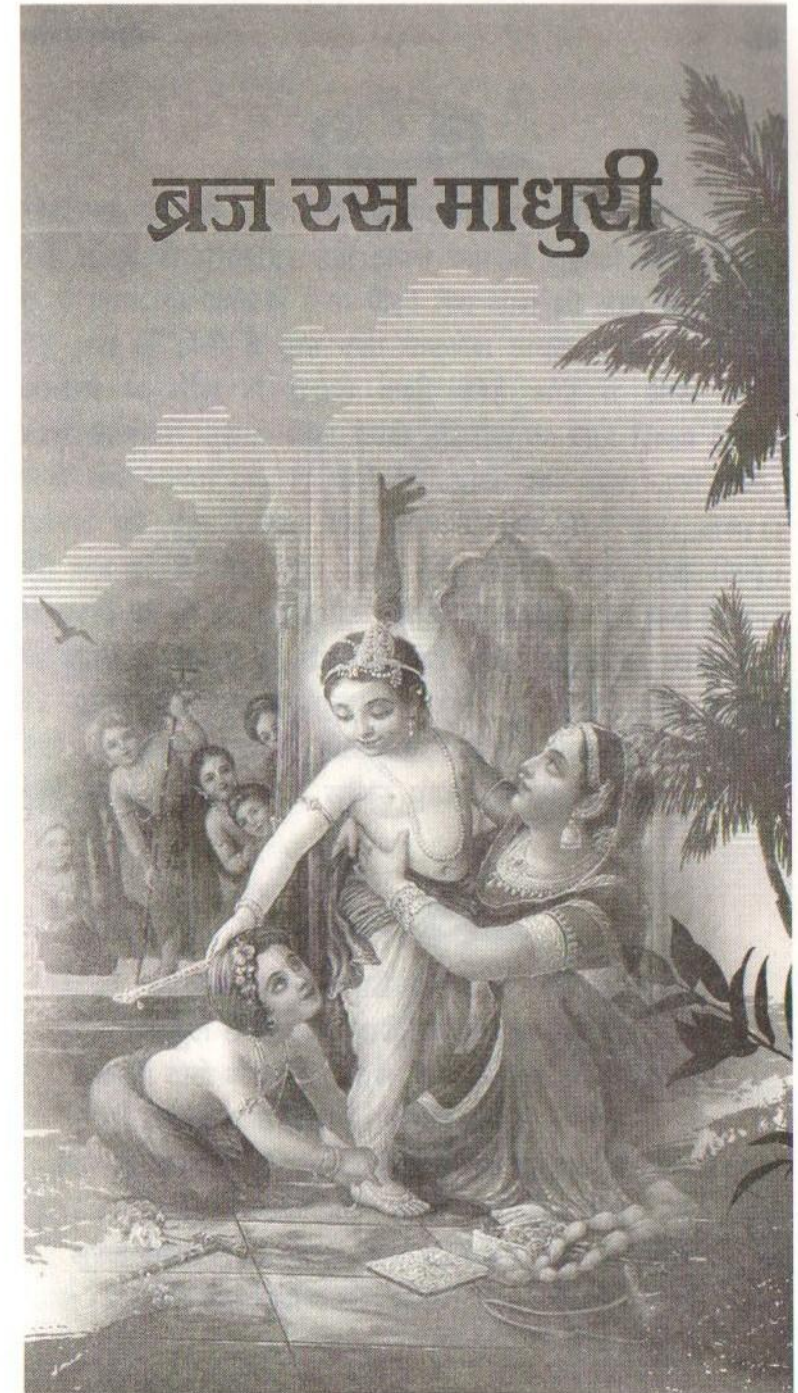
पूज्य कार्णि स्वामी श्रीगुरु शरणानन्दजी महाराज
के आनुगत्य में वर्ष 1999 में व्रज चौरासी कोस
की पैदल परिक्रमा में सहयात्रियों के साथ
भक्तिमती माया गुप्ता (गोले में)



ब्रजरज माहात्म्य गोष्ठी में मंचासीन - श्रीमुरलिका देवी, श्रीसत्यनारायण दास, श्रीमनोजमोहन शास्त्री, कार्ष्णि स्वामी श्रीगुरुशरणानन्दजी, श्रीरामकृपाल त्रिपाठी, श्रीदेवकीनन्दन ठाकुरजी, श्रीमहेशानन्दजी सरस्वती आदि सन्तगण



भक्तमाल कथा का रसास्वादन कराते हुए जगद्गुरु द्वाराचार्य श्रीमल्लकृष्णधारीश्वर स्वामी श्रीराजेन्द्रदास देवाचार्यजी महाराज





नन्दलाल गुपाल दयाल हरी वृन्दावन मोहे बुला लेना।
मेरी आँखों से परदा दूर हटा अपने रूप में मुझको बुला लेना॥
मैं तो माया के जाल में ऐसा फँसी तेरा नाम भी लेना भूल गयी।
मेरी अंत में होनी है क्या दशा करुणेश अधम को बचा लेना॥
धनधान न माँगू मैं तुझसे कभी कोई और न आस मेरी।
अपने चरणों में मुझको बिठा करके हरिनाम का जाप सिखा देना॥
योगी बन अलख जगाया करूँ तेरे आठों पहर गुण गाया करूँ।
ब्रजवन की धूल रमाया करूँ आनन्द वन मोहे बुला लेना॥
मेरे मन में है सेवा तेरी करूँ तेरी माधुरी मूरत देख जियूँ।
तेरे चरणों को धो धो करके पीऊँ, अपने चरणों की दासी बना लेना॥
मेरे कानों में मुरली की तान रहे तेरी साँवरी सूरत का ध्यान रहे।
मेरे प्राणों में प्राण समान रहे बंशी की तान सुना देना॥
मिले भक्तों के काम से गर अवसर करना दीन पे अपनी दया की नजर।
कभी उमड़े तुम्हारा दया सागर पहले हमको पार लगा देना॥



आओगे कब गिरधारी हमारी सुध लेने को।
व्याकुल है सब नर नारी हमारी सुध लेने को॥
डगमग डोले मेरी नैया। तुम बिन भगवन् कौन खिवैया।
ताकैं बाट तिहारी। हमारी सुध लेने को।
जग में छाया है अँधियारा। भगवन् कर दो अब उजियारा॥
महिमा तेरी न्यारी। हमारी सुध लेने को।
सूरज माया में भरमाया। मन पर परदा मोह का छाया॥
करो दूर व्यथा सारी। हमारी सुध लेने को॥



सांवरे घन श्याम तुम तो प्रेम के अवतार हो।
संकटों में फँस रही हूँ तुम ही खेवनहार हो।
आपका दर्शन मुझे इस छवि में बारम्बार हो।
हाथ में मुरली मुकुट सिर पर गले में हार हो।
चल रही आँधी भयानक भँवर में नैया पड़ी।
थाम लो पतवार गिरिधर तब ही बेड़ा पार हो।
नग्नपद गज के रुदन पर दौड़ने वाले प्रभो।
देखना निष्फल न मेरे आँसुओं की धार हो।



कहाँ हो यशोदा के छैया कहाँ हो, सुदामा के मुँहबोले भैया कहाँ हो।
कहाँ रासलीला कहाँ बाँसुरी है, कहाँ कृष्ण मुरली बजैया कहाँ हो।
सभा में दुश्शासन के हाथों सताई, सती द्रौपदी के भैया कहाँ हो।
बने सारथी भक्त अर्जुन के कारण, वही भक्तवत्सल कन्हैया कहाँ हो।



क्यों ये कहते हो भगवान आते नहीं।
सच्चे दिल से इन्हें तुम बुलाते नहीं।
क्यों ये कहते हो कुछ भोग खाते नहीं।
भीलनी भाव से तुम खिलाते नहीं।
क्यों यह कहते हो लज्जा बचाते नहीं।
द्रौपदी सी विनय तुम सुनाते नहीं।
क्यों ये कहते हो गीता सुनाते नहीं।
पारथी धारणा तुम बनाते नहीं।
क्यों ये कहते हो भगवान सोते नहीं।
माँ यशोदा की भाँति सुलाते नहीं।



मदनमोहन जरा वंशी बजा दोगे तो क्या होगा।
सुरीले राग मुरली में सुना दोगे तो क्या होगा।
तुम्हारी बाँसुरी मोहन लगे हमको बहुत प्यारी।
इसी से अब जरा गाकर सुना दोगे तो क्या होगा।
बजाई कुंज में जब थी हुआ बेचैन दिल मेरा।
मुझे उसकी अभी तुम धुन सुना दोगे तो क्या होगा।
करूँ कर जोड़कर विनती तुम्हीं त्रिभुवन के स्वामी हो।
मेरी नैया किनारे से लगा दोगे तो क्या होगा।



जय कृष्ण हरे जय राम हरे।
जय गोपीवल्लभ श्याम हरे।
तुम दीनबन्धु जग पावन हो।
हम दीन पतित अति भारी हैं।
है नहीं जगत में ठौर कहीं।
हम आये शरण तुम्हारी हैं।
हम खड़े तुम्हारे हैं दर पर।
तुम पर तन मन धन वारे।
अब कष्ट हरो हरि हे हमरे।
हम निन्दित निपट दुःखारे हैं।
मथुरा में कंस पछाड़ा था।
लंका में रावण मारा था।
जय कृष्ण हरे जय श्याम हरे।
जय गोपीवल्लभ श्याम हरे।

8

पलन लगी अखियाँ भरी ।
 यादभरी जो बतियाँ रस भरी ॥
 मोर मुकुट की शोभा न्यारी निरख निरख मीरा छवि प्यारी ।
 मगन भई अखियाँ दरश भरी ।
 वृन्दावन की कुंज गलिन में रास रचावत संग सखिन में ॥
 भूल गई सुधियाँ दरश भरी ।
 जमुना के तट पर बंसी बजावत, ग्वालबाल संग हिलमिल गावत ॥
 चकित भई सखियाँ दरश भरी ।
 चुपके चुपके माखन चुराकर कदम में चढ़कर चीर चुराकर ।
 लजित भई सखियाँ दरश भरी ॥

9

तुम बिन मोहे कल न परे साँवरे गिरिधारी ।
 जाय बसे अनत कहुँ हमरी सुध विसारी ॥
 जिय की बात कासे कहुँ, हिय की पीर कैसे सहूँ ।
 जानत हो तुम सबही मोहन मदन मुरारी ॥

10

बोलो बोलो जी कन्हैया मोहन नन्द दुलारे ।
 घनश्याम गोवर्धनधारी हो तुम सबके सहारे ॥
 कहीं पूतना मारी तारी कहीं कुब्जा उबारी ।
 कहीं बैठकर माखन खायो कहीं बने दातारी ॥
 कहीं सुदामा संग बैठ उसके चरणों को धोते ।
 कहीं भक्त से भगवन बनकर अपने प्रण को खोते ॥

11

भजन बिना रे बीती जाये उमरिया ॥
 मलमल धोऊँ उजला न होवे ।
 हमारा दिल रे जैसी काली कमरिया ॥
 ना मैं माँगू पट पीताम्बर ।
 हमें तो दीजो रे प्रभु ज्ञान गुदड़िया ॥
 काम क्रोध ने ऐसा घेरा ।
 नाथ तेरी रे मैं तो भूली डगरिया ॥
 पर उपकार किया कुछ नाहीं ।
 पाप की रे मैंने बाँधी गबरिया ॥
 हमरी अब प्रभु नाव उबारो ।
 हमारी रे प्रभु लीजो खबरिया ॥

12

मैं दूँ फिरी जग सारा, मुझे मिला न बंसीवाला ।
 वन वीथिन जाकर भटकी, वंशीवट आकर अटकी ॥
 मुझे मिला न नन्द दुलारा । मैं.....
 बिन दर्शन जी घबराये, उन बिन कछु और न भाये ।
 ये जीवन है बेकारा । मैं.....
 अब दिल की कली खिलादे, मतवाला मुझे बनादे ॥
 तेरा ही एक सहारा । मैं.....
 ऐ रास रचाने वाले, मुरलीधर प्यारे ग्वाले ।
 दर्शन का इष्ट हमारा । मैं.....
 गिरवर नख धारण हारे, भूभार उतारन हारे ॥
 जग के हो प्राणाधारा । मैं.....
 ओ दीन शरण रखवाले, ओ काली कमली वाले ।
 मेरा भी कर निस्तारा ॥ मैं.....



भक्तों की लाज रखने भगवान बनके आये।
मेरे अजान वन में तुम प्राण बनके आये।।
दुखियारी द्रौपदी का जब चीर खिंच रहा था।
उसकी पुकार सुनकर परिधान बनके आये।।
निर्बल गजेन्द्र आया जब ग्राह की पकड़ में।
उसकी पुकार सुनकर नभयान बनके आये।।
धमकाया था पिता ने प्रह्लाद भक्त को जब।
नरसिंह होके भक्तों की शान बनके आये।।
संसार सिंधु पड़ कर बहते सदैव प्राणी।
कर चन्द्रमणि पर करुणा जलयात्रा बनके आये।।



भजन श्यामसुन्दर का करते रहोगे,
तो संसार सागर से तरते रहोगे।।
कृपानाथ केवल मिलेंगे किसी दिन,
जो सत्संग पथ से गुजरते रहोगे।
चढ़ोगे हृदय पर सभी के सदा तुम,
तो अभिमान गिरि से उतरते रहोगे।।
न होगा कभी क्लेश मनको तुम्हारे,
जो अपनी बढ़ाई से डरते रहोगे।
छलक ही पड़ेगा दया सिन्धु का दिल,
जो दृग बिन्दु से रोज भरते रहोगे।।

जय जय राधे जय जय श्याम
जय जय श्री वृन्दावन धाम



तुम तो घनश्याम जनम के कपटी।
औरों की गगरी प्रभु भर देते, मेरी गगरी क्यों सिर से पटकी।।
औरों को प्रभु दर्शन देते, मैं तो तेरे दर्श बिन भटकी।
औरों की गैया तुम दुह देते, मेरी गैया क्यों वन वन भटकी।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल वैजन्ती माला लटकी।
औरों की नैया पार लगादी मेरी नैया क्यों भँवर विच अटकी।।



कौन गली गये श्याम सखी री कौन गली गये श्याम।
जमुना तट पर देकर मुझको विरहा का पैगाम।।
साँवरी सूरत फिर न दिखाई मुरली की आवाज न आई।
गोकुल की गलियों में पुकारा लेकर लाखों नाम।।
बृज ढूँढ़ा वृन्दावन ढूँढ़ा बाहर ढूँढ़ा आँगन ढूँढ़ा।
खोज खोजकर हार गई मैं मिले नहीं घनश्याम।।



जमुना तट आये बिहारी लिये संग में राधा प्यारी।।
राधा बोली बंसी बजावो मोहन नहीं बजाते।
रुठ गई इतने पर सजनी साजन इन्हें मनाते।।
मना लिया रो धोकर ऐसे नटखट हैं गिरधारी।
बंसी लेकर मधुर स्वरों में प्रीत का गीत सुनाया।।
जिसको सुनकर राधा ने तन मन का होश भुलाया।
वो सुध बुध भूले बैठी थी हँसते थे गिरधारी।।



छिपे हो कहाँ कष्टहारी कन्हैया मुकुट मोर वाले विहारी कन्हैया ।।
पुकारा था गज ने दुखी होके भगवन बचाया उसे तज सवारी कन्हैया ।
दया की नजर से किनारे लगादी भँवर बीच नैया हमारी कन्हैया ।।
सभा मौझ जब द्रौपदी ने पुकारा बढ़ाई थी तब तुमने सारी कन्हैया ।
सुना है हजारों पतित तुमने तारे ।। हमारी भी है अब की बारी कन्हैया ।।



मन केता समझाया रे पंछी बावरिया ।
क्यों हरि नाम विसराया रे पंछी बावरिया ।।
साधन देह पाय यह नर तन मोहजाल उरझाया रे पंछी बावरिया ।
बालापन तो खेल में खोया यौवन नाच नचाया रे पंछी बावरिया ।।
अब क्या सोच रहा मन मूरख शीर्षकाल मंडराया रे पंछी बावरिया ।
अजहूँ जो दासी को शरण लो सब बिगड़ी बनजाय रे पंछी बावरिया ।।



पार करेगा नैया रे भज कृष्ण कन्हैया ।
अबला को दे शरण न कोई भरी सभा में द्रौपदी रोई ।।
पहुँचे चीर बढ़ैया रे । भज कृष्ण कन्हैया ।।
अर्जुन के हित रथ को हाँका, साँवरिया गिरधारी बाँका ।।
काली नाग नथैया रे । भज कृष्ण कन्हैया ।।
भक्त सुदामा चावल लाया गले लगा कर भोग लगाया ।
कह कर भैया भैया रे । भज कृष्ण कन्हैया ।।
दीनानाथ सर्व हितकारी संकट मोचन कृष्ण मुरारी ।
यशोदा लाज रखैया रे । भज कृष्ण कन्हैया ।।



मेरी आस यही है हे भगवन तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूँ ।
तुम रुठ करो मेरी इसमें खुशी मैं अकेले मैं तुमको मनाया करूँ ।।
कोई वहरा कहे या दीवाना कहे चाहे पागल सारा जमाना कहे ।
मेरे रोने से तुमको जो आये हँसी तो मैं रो रोकर तुमको हँसाया करूँ ।।
मैं कैसे विसारूँ तेरे नाम को रोज पलकों से झाड़ूँ तेरी राह को ।
तेरे चरणों की धूलि को चंदन समझ माथे पर अपने लगाया करूँ ।।



अखियाँ हरि दरसन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नयन को निसदिन रहत उदासी ।।
केसर तिलक मोतिन की माला वृन्दावन के वासी ।
नेह लगाय त्यागि गये तून सम डारि गये गल फाँसी ।।
काहू के मन की को जानत है लोगन के मन हाँसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन लैहों करवट कासी ।।



इस तन में रमा करना, इस मन में रमा करना ।
वैकुण्ठ तो यही है, इसमें ही बसा करना ।।
हम मोर बनके मोहन, नाचा करेंगे वन वन ।
तुम श्याम घटा बनकर, उस वन में उठा करना ।।
हो हो के हम पपीहा, पी-पी रटा करेंगे ।
तुम स्वाति बूँद बन कर, प्यासे पे दया करना ।।
हम भी समस्त जग में, तुमको ही निहारेंगे ।
तुम दिव्य ज्योति बनकर, नयनों में रहा करना ।।

24

हो रसिया मैं तो शरण तिहारी ।।
 नहीं साधन बल वचन चातुरी ।।
 एक भरोसो चरणे गिरिधारी ।।
 कड़वी तुँवरिया पै नीच भूमि की ।।
 गुण सागर पिया तुम्ह ही सँभारी ।।
 मैं अति दीन दुःखी हूँ बालक ।।
 नाथ न दीजै अनाथ विसारी ।।
 निजजन जानि सँभारोगे प्रियतम ।।
 प्रेम सखी नित जाऊँ बलिहारी ।।

25

सुना है तारे हैं तुमने लाखों । हमें जो तारो तो हम भी जानें ।।
 निशाचरों को संहारा तुमने । उतारा पृथ्वी का भार तुमने ।।
 उबारा गजराज ग्राह से है । हमें उबारो तो हम भी जानें ।।
 हरा अहिल्या का शाप तुमने । मिटाया शवरी का शाप तुमने ।।
 हमारा भी पाप हाय भगवन् । अगर निवारो तो हम भी जानें ।।

26

भारत में फिर से आजा गिरिवर उठाने वाले ।
 सोतों को फिर जगा जा गीता के गाने वाले ।
 गूँजा था जिससे मधुबन नाचा था जिससे त्रिभुवन ।
 वह तान फिर सुनाजा वंशी बजाने वाले ।।
 दुख द्वन्द्व बढ़ रहे हैं दुष्काल पड़ रहे हैं ।
 फिर कष्ट सब मिटाजा गौँएँ चराने वाले ।।
 है राधे श्याम निर्बल, जन तेरे, भक्त वत्सल ।
 बिगड़ी को फिर बनाजा बिगड़ी बनाने वाले ।।

27

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।
 संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।।
 न हम में बल है न हम में शक्ति ।
 न हम में साधन न हम में भक्ति ।।
 तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक ।
 जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक ।
 जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 सुना है हम अंश हैं तुम्हारे ।
 तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे ।
 यह है तो सुधि तुमने क्यों बिसारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 बुरे जो हम हैं तो हैं तुम्हारे ।
 भले जो हम हैं तो हैं तुम्हारे ।
 तुम्हारे पथ के हैं हम भिखारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 प्रदान कर दो महान शक्ति ।
 भरो हमारे में ज्ञान भक्ति ।
 तभी कहाओगे नाथ हारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 न होगी जब तक कृपा की दृष्टि ।
 न होगी जब तक दया की सृष्टि ।
 न तुम भी तब हो न्यायकारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।
 हमें तो बस ढेर नाम की है ।
 पुकार यह राधे श्याम की है ।
 तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी । दया करो हे दयालु भगवन् ।

विनती करत प्रभु मैं कर जोरी, तुम अवलम्ब परम प्रिय मोरे ।
 बीच भँवर में आन फँसी हूँ, पार लगावो नैय्या मोरी ।



अब तो बीत चली बरसात कहो कब आवोगे घनश्याम ।
 नाथ तुम यमुना के तट पर, सखियों का चीर चुराने को
 कब आओगे घनश्याम ।।
 नाथ तुम वृन्दावन कुंजों में, राधा को मस्त बनाने को
 कब आओगे घनश्याम ।।
 नाथ तुम गोकुल के वासी, सखियों संग रास रचाने को
 कब आओगे घनश्याम ।।
 नाथ तुम भारत में आना, हम सब को दर्श दिखाने को
 कब आओगे घनश्याम ।।



मेरे भगवन मैं तेरे सहारे से ।
 मेरी नैया लगा दो किनारे से ।
 मेरी नैया का कोई खिचैया नहीं ।
 कोई जाके ये कह दो कन्हैया से ।। मेरी.....
 झोली भर दो मेरी झोली भर दो ।
 हाथ खाली न जाय दुआरे से । मेरी.....
 मेरी नैया भँवर में है फँसी हुई ।
 बेड़ा पार लगादो जमाने से ।। मेरी.....



करु मन नंदनंदन को ध्यान ।
 यहि अवसर तोहे फिर न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ।
 घूँघरवारी अलकैं मुख पर कुंडल झलकत कान ।
 नारायन अलसाने नैना झूमत रूप निधान ।।



कोई कुछ माँगे कोई कुछ माँगे मैं माँगू यह वरदान रे,
 तेरे चरण कमल में ध्यान रहे
 धन दौलत सम्पति नहीं माँगू न माँगू सुत नार
 मुक्ति न माँगू स्वर्ग न माँगू माँगू रज-चरनार
 है आस यही अरदास यही जब तन से निकले प्राण रे
 तेरे चरण कमल का ध्यान रहे
 अलख निरंजन हरि अविनाशी भक्तन के रखवा रे
 अपने जन की लाज बचाओ सब दुःख मेटन हारे
 तेरे द्वार खड़ा चरणों में पड़ा यह बालक है नादान है
 तेरे चरण कमल में ध्यान रहे

बंशी वाले प्रीतम प्यारे, तेरा एक सहारा
 तुम बिन हमरी कौन खबर ले न कोई और हमारा
 कोई और नहीं कोई ठौर नहीं कोई जान नहीं पहचान रे
 तेरे चरण कमल में ध्यान रहे
 निज आत्म तोहे प्रेम पुकारे नंगली वाले आओ
 जीवन नैया डोल रही है आकर पार लगाओ
 है दाद यही फरियाद यही और दुखिया है ये जान रे
 तेरे चरण कमल में ध्यान रहे



तुम मेरी राखो लाज हरी ।
 तुम जानत सब अन्तरयामी करनी कछु न करी ।।
 औगुन मोसे विसरत नाही पलछिन घरी घरी ।
 सब प्रपंच की पोट बाँधकर अपने शीश धरी ।।
 दारा सुत धन मोह लियो है सुधबुध सब विसरी ।
 सूर पतित मोहे वेग उबारो मोरी नाव भरी ।।



ओ नर भोले कुछ कर भोले इस जीवन का उद्धार रे
 तेरा जनम अकारथ जाय रहा ।
 ऐ नर तुझको फिर न मिलेगी ऐसी सुन्दर देही ।
 जग धन्धों में पड़कर मूरख भूला राम सनेही रे ।
 मूरख भूला.....
 ओ मन पगले मत बन पगले कुछ करले सोच विचार ले ।
 रे तेरा जनम अकारथ.....
 मोह ममता की बांध गळरिया बोझ बढ़ाता जाये ।
 यह जग मेला चार घड़ी का राही क्यों भरमाये
 रे मूरख राही.....
 यह सब संगी और अरधंगी है सब मतलब के यार ।
 रे तेरा जनम अकारथ.....
 ओ मन पगले भूल न जाना देख जगत का मेला ।
 यह तन भी तेरा साथ न देगा जाय जीव अकेला ।
 रे मूरख जाये जीव अकेला....
 उठ बांध कमर हरिनाम सुमर तेरी नैया है मझधार ।
 रे तेरा जनम अकारथ.....
 प्रेम न कर तू प्रेम जगत से है ये झूठ कहानी
 इक दिन बन्दे मिट जायेगी तेरी नाम निशानी
 रे मूरख तेरी नाम निशानी
 कोई दिल न दुखा न किसी को सता बस यही है पर उपकार
 रे तेरा जनम अकारथ..... ।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
 हे नाथ नारायण वासुदेव



हे भगवन् बतादें मोहे मैं कैसे जपूँ नाम तेरा ।
 काहे की पृथिवी काहे का अम्बर । काहे का संसारा । मैं कैसे जपूँ...
 सत्य की पृथिवी धर्म का अम्बर । स्वारथ का संसारा । मैं कैसे जपूँ...
 कौन बनावे कौन जिलावे । कौन संहारनहारा । मैं कैसे जपूँ...
 ब्रह्मा बनावे विष्णु जिलावे । शम्भू संहारनहारा । मैं कैसे जपूँ...



मुझे केवल आस तुम्हारी साँवरिया गिरधारी ।
 कबसे तुमको ढूँढ़ रही हूँ ।
 ढूँढ़त ढूँढ़त हार गई हूँ ।
 मुझे आकर दर्श दिखाओ । साँवरिया.....
 मन मन्दिर मेरा सूना पड़ा है ।
 पापों से ये भरा पड़ा है ।
 हृदय की जोत जगाओ । साँवरिया.....
 छई घटा प्रभु हुआ अँधेरा ।
 तेरे बिना अब कोई न मेरा ।
 मेरी नैया को पार लगाओ । साँवरिया.....



नयना रे चित चोर बतावो ।
 तुमहीं रहत भवन रखवारे बाँके वीर कहावो ।
 तुमरे बीच गयो मन मेरो चाहे सौँहे खावो ।
 अब क्यों रोवत हो दइमारे कहूँ तौ थाह लगावो ।
 घर के भेदी बैठे द्वार पै दिन में घर लुटवावो ।
 नारायन मोहे वस्तु न चाहिये लेनेहार दिखावो ।।



अब कैसे छूटै नाम रट लागी ?

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी ।

जाकी अंग अंग बास समानी ॥

प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।

जैसे चितवत चंद चकोरा ॥

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती ।

जाकी ज्योत बरै दिन राती ॥

प्रभु जी तुम मोती हम धागा ।

जैसे सोनेहि मिलत सुहागा ॥

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा ।

ऐसी भगति करै रैदासा ॥



जाहि लगन लगी घनस्याम की ।

धरत कहूँ पग, परत हैं कितहूँ ।

भूलि जाय सुधि धाम की ॥

छबि निहार नहीं रहत सार कछु ।

घरि पल निसिदिन जाम की ॥

जित मुँह उठै तितै ही धावत ।

सुरति न छाया घाम की ॥

अस्तुति निन्दा करौ भलै ही ।

मेंड़ तजी कुछ गाम की ॥

नारायन बौरी भई डोलै ।

रही न काहू काम की ॥



सुने री मैंने निरबल के बल राम ।

पिछली साख भरूँ सन्तन की, अड़े सँवारे काम ॥

जब लागि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरो नहीं काम ।

निरबल हूँ बलराम पुकार्यो, आये आधे नाम ॥

द्रुपद सुता निरबल भई ता दिन, तजि आये निज धाम ।

दुस्सासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम ॥

अपबल तपबल और बाहुबल, चौथो है बल दाम ।

सूर किसोर कृपा ते सब बल, हारे को हरिनाम ॥



हरि बोलो सबहिं मिल प्रेम सहित हरि बोलो ।

सीताराम बोलो राधेश्याम बोलो ॥

माटी की देहिया माटी में मिल जाय ।

राम नाम सच्चा जो संग चला जाय ॥

ममता की नदिया में बहता संसार ।

राम नाम नैया लगावे बेड़ा पार ॥



विनय मेरी सुन लेना । ऐ मेरे भगवान् ।

शरण में ले लेना ॥

नैया हमारी विच मझधारा सूझत नहीं हमें किनारा ।

पार मुझे कर देना ॥ ऐ मेरे भगवान् ॥

चुनकर बेर प्रेम से लायी नयनों में नीर प्रेम जल लाई ।

भेंट मेरी ले लेना ॥ ऐ मेरे भगवान् ॥

मन मन्दिर में मेरी आना रोम रोम में मेरे रम जाना ।

दर्श मुझे दे देना । ऐ मेरे भगवान् ॥

शरण में ले लेना ॥

42

साधो निर्धन के धन गिरिधारी, सन्तन के प्रभु हितकारी।
 दुर्बल गात सुदामा ब्राह्मण पूछत है उनकी नारी।
 हरि से मित्र तुम्हारे स्वामी तुम न गये मैं पटै हारी॥
 तू तिरिया चतुरंग बावरी कौन कुमत तेरी मत मारी।
 कर्म हमारे दरिद्र लिखो है कहा करिगे प्रभु गिरधारी॥
 भारी दान दियो शिवशंकर भस्मासुर चाहत नारी।
 तीन लोक प्रभु भ्रमत फिरे हैं इन्हें न मिले मुकुटधारी॥
 पार्वती का रूप धरा प्रभु आन मिले हैं बनवारी।
 सूरदास प्रभु आस चरण की छिन में पाप कटें भारी॥

43

हँसि पूछे जनकपुर की नारी नाथ कैसे गज के फंद छुड़ाये।
 गज और ग्राह लइत जल भीतर दारुण द्वन्द्व मचाये॥
 गज की टेर सुनी यदुनन्दन गरुड़ छोड़ कर धाये।
 भीलनी के बेर सुदामा के तन्दुल रुच-रुच भोग लगाये॥
 दुर्योधन की मेवा त्यागी साग बिदुर घर खाये।
 इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर पल छिन वारि बहाये॥
 गोवर्धन स्वामी नख पर लीन्हों इन्द्र के मान घटाये।
 ले प्रहलाद खम्भ से बाँधो राजन त्रास दिखाये।
 अपने जन की प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप दिखाये॥
 खोले न खुले सिया जी का कंगना कैसे चाप चढ़ाये।
 कोमल गात अंग अति नीके देखन मनहिं लुभाये॥
 जहाँ जहाँ भीर पड़ी सन्तन पर तहँ तहँ नाथ सिधाये।
 तुलसीदास सेवक रघुनन्दन आनन्द मंगल गाये॥

जय सीता राम, सीता राम, सीता राम जय सीता राम।

44

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता।
 गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धु सुता प्रियकन्ता।
 पालन सुरधरनी अद्भुत करनी मरम न जाने कोई।
 जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई।
 जय जय अविनासी सब घटवासी व्यापक परमानन्दा।
 अविगत गोतीतं चरित पुनीतं माया रहित मुकुन्दा।
 जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा।
 निसिवासर ध्यावहिं हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा॥
 जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
 सो करहु अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा॥
 जो भवभय भंजन मुनिमन रंजन व्यंजन विपति वरूथा।
 मन वच कर्म वाणी छँडि सयानी शरण सकल सुरजूथा।
 सारद सुनि शेषा रिषय अशेषा जाकहुँ कोउ नहिं जाना।
 जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवहु सो श्री भगवाना।
 भववारिधि मन्दर सब विधि सुन्दर गुण मन्दिर सुख पुंजा।
 मुनिसिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा॥

45

कब मिलिहौ रघुनाथ हमारे।
 जैसे मिले प्रहलाद भक्त को खंभ फाड़ हिरनाकुश मारे॥
 जैसे मिले हरि द्रुपद सुता को खँचत चीर दुसासन हारे।
 जैसे मिले हरि राजा बली को भोर भयो द्वारे पर ढाढ़े॥
 तुलसीदास आस रघुवर की हरि चरणों पर जाऊँ बलिहारे॥

श्रीराम जय राम जय जय राम।

श्रीराम जय राम जय जय राम।

46

बतादे मन तू किधर ले जायेगा ।
 गहरी नदिया नाव पुरानी उसमें बैठ जायेगा ।।
 धर्मी-धर्मी पार उतर गये पापी गोता खायेगा ।
 कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी उसमें कुटुम खिलायेगा ।।
 जब यमराज लेखा माँगे क्या तू बतायेगा ।
 तत्ते तत्ते खम्भे गाढ़े इसमें तू बँधायेगा ।।
 पीछे से जब मार पड़ेगी क्या तू बतायेगा ।।

47

ब्रजराज कहीं यदुराज कहीं नित रूप अनूप दिखावत हो ।
 कभी तीर कमान है हाथों में कभी नैन के सैन चलावत हो ।।
 है विश्व तुम्हारे बंधन में फिर नाथ बँधे क्यों ओखल में ।
 कभी फूल से कोमल आप बने कभी नख पे पहाड़ उठावत हो ।।
 वही आपका दर्शन पाता है जिसे ज्ञान के नैन दिये तुमने ।
 है वास तुम्हारा घट घट में मन कुंज में रास स्वावत हो ।।
 जिस रूप का ध्यान धरे कोई उस रूप में तुमको पायेगा ।
 रस राज निराले हो नटवर संसार को नाच नचावत हो ।।

48

मन मतवाला जपूँ कैसे माला ।
 न्हाय धोय पूजा पर बैठी भरम जाल में हाल बेहाला ।।
 चंचल मन बस में नहीं आवे हमरी समझ में पड़ गया पाला ।
 इस कोठरिया में दस दरवाजे ज्ञान कोठरिया में पड़ गया ताला ।।
 कहत कबीर सुनो भई साधो दर्शन दो मुझे दीनदयाला ।।

49

जगदीश पर अगर ये तन मन निसार होता ।
 तो इस मनुष्य तन पर कुछ मुझको प्यार होता ।।
 संसार को अभी तक मैंने निसार जाना ।
 यदि नाथ मिल ही जाते तो क्या ही सार होता ।।
 हे देव तूने मुझको रजकण नहीं बनाया ।
 वायु में उड़ते उड़ते चरणों में आन पड़ता ।।
 हे देव तूने मुझको नहीं पुष्प ही बनाया ।
 चरणों में चढ़ते-चढ़ते गले का हार बनता ।।
 हे देव तूने मुझको दर्पण नहीं बनाया ।
 दर्शन तो रातदिन में दो चार बार होता ।।
 बेकार लोग मुझको यह कहके छेड़ते हैं ।
 तुझे नाथ मिल ही जाते जो तप अपार होता ।।
 कहें राधेश्याम दिल में अनुराग अपने प्रभु का ।
 गर सच्चा प्यार होता बेड़ा ही पार होता ।।

50

राम नाम धन पाया मैंने राम नाम धन पाया ।
 ना मैं तीरथ करने निकली ना मैंने ब्रह्म रिझाया ।।
 राम नाम धन आप सिमटकर मेरे घर में आया ।
 ना मैं गंगा गयी नहाने ना मैंने शंख बजाया ।।
 जन्म जन्म की किस्मत जागी मन में राम समाया ।
 दूजो धन है आना जाना चलती फिरती छाया ।
 रामनाम धन घटत घटे नहीं दिन दिन होत सवाया ।।

सीताराम मनोहर जोड़ी । जय दशरथ नन्दन जनक किशोरी ।।



51

मैं तो भूल गई रे भजन तेरा करना ।
 खाना न भूली पीना न भूली भूल गई रे ध्यान तेरा धरना ॥
 करना कुकर्मों का बिल्कुल न भूली भूल गई रे सुकर्मों से डरना ।
 दुनिया की दहशत जरा भी न भूली भूल गई रे तेरे डर से डरना ॥
 निशदिन पापों का करना न भूली भूल गई रे धरम तेरा करना ।
 कैसे पिता तू तारेगा मुझको भूल गई रे मैं तो रूप तेरा चरणा ॥

52

आओ सब मिल गायें गुण गान रे साँवलिया ।
 संत रूप सब मिलकर खेलो ताश रे साँवलिया ॥
 दुई को दिल से निकाल दो और एक रूप सबको जानो ।
 तिरी में हैं तीन लोक फिर तीन तत्त्व को पहचानो ॥
 चौथे में हैं चतुर्भुजी भगवान रे साँवलिया ।
 पंजे में हैं पंचतत्त्व जिससे शरीर तैयार हुआ ॥
 छक्के से छह शत्रु मारे काम क्रोध को जीत लिया ।
 सत्ते में हैं सत्यनारायण रे साँवलिया ॥
 अट्ठे में हैं अष्टभुजी महारानी नौ दुर्गरानी ।
 नहले से वह करे निहाल ऐसी हैं वह वरदानी ॥
 दहले में है दया सिन्धु भगवान रे साँवलिया ।
 जब गुलाम को जीत लिया तो बेगम पर पैगाम किया ॥
 खुद ही बादशाह बन बैठे फिर अमर लोक को जीत लिया ।
 इक्के में है एक रूप ओंकार रे साँवलिया ॥

53

पीले रे अब तू हो मतवाला प्याला प्रेम हरी रस का रे ।
 पाप पुण्य दोउ भोगन आये कौन तेरा और तू किसका रे ॥
 जो दम जीवे हरि गुण गाले धन यौवन सपना निशिवा रे ।
 बाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भया नारी वश कारे ॥
 वृद्ध भया कफ वाय ने घेरा खाट पड़ा नहीं जा मसकारे ।
 नाभि कमल में है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशु का रे ॥
 बिन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे वन कारे ।
 लख चौरासी उभरा चाहे छोड़ कामिनी का चसका रे ॥
 प्रेम मगन मन चरणदास कहें नखशिख रूप भरा विष का रे ।

54

साई नाम अनमोल मनुवा मन हिरदय से बोल ।
 ये दुनियाँ है पाप का सागर, नीयत डौवा डोल ॥
 दुनियाँ है रंगीन तमाशा पाप रहा है डोल ।
 उलझ रहा है क्यों माया में पामर आँखें खोल ॥
 झूठी है सब दुनियादारी साई की जय बोल ।
 साई नाम की रटन लगा ले सौदा है बिन मोल ॥
 तोड़ के नाता दुनिया से अब साई से नाता जोड़ ॥

55

बीत गये दिन भजन बिना रे ।
 बाल अवस्था खेल गँवायो जब जवानि तब मान घनो रे ॥
 लाहे कारन मूल गँवायो अजहूँ न गइ मन की तृसना रे ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो पार उतर गये संत जना रे ॥

56

गजब का दावा है पापियों का,
 अजीब ज़िद पर मचल रहे हैं।
 उन्हीं से झगड़े पर तुल रहे हैं,
 जिनसे त्रिलोक पल रहे हैं।
 सुना है जब से हे श्यामसुन्दर,
 अधम उधारन बने हो जब से।
 हमी से पाके खिताबो भगवन्,
 हमी से आँखें बदल रहे हैं॥ गजब का॥
 हमारा प्रण था कि पाप कर लें,
 तुम्हारा प्रण था कि पाप हर लें।
 हम अपने वादे पर चल रहे हैं,
 वो अपने वादे से हट रहे हैं॥ गजब का॥
 गरीब अधमों के तुम हो प्रेमी,
 ये बात मुद्दत से सुन रहे हैं।
 इसी भरोसे पर तुमसे भगवन्,
 झगड़ रहे हैं मचल रहे हैं॥ गजब का॥
 नहीं है आँखों में अश्रुधारा,
 तुम्हारी उल्फत का ये असर है।
 पड़े हैं दिल पर पापों के छले,
 वह अश्रु बन कर निकल रहे हैं॥ गजब का॥

57

घूँघट का पट खोल री तोहे पिया मिलेंगे।
 घट घट में वह साईं रमता कटुक वचन मत बोल रे॥
 रंगमहल में दीप जलत है आसन से मत डोल रे।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो अनहद बाजत ढोल रे॥

58

आजा आजा इधर ए नन्द दुलारे आजा।
 फिर वो बंसी लिये जमुना के किनारे आजा॥
 आज की शब है नसीहत एक जमाने के लिये।
 रात थी रात था सौभाग्य हमारा चमका॥
 उम्मेदों की सितारा चमका।
 आजा इधर ए नन्द दुलारे आजा॥
 लिया मथुरा में जन्म जाके रहा गोकुल में।
 पाँव के रखते ही अमृत मिला जमना जल में।
 वो कन्हैया वो मेरा दिल का लुभाने वाला।
 वो जमाने में नये रूप से आने वाला।
 वो बड़े प्रेम से बंसी को बजाने वाला।
 वो नजर ही नहीं जिसको नहीं हसरत हमारी
 दिल वो क्या दिल है नहीं जिसमें मोहन।
 नन्द के लाल जसोदा के दुलारे मोहन।
 सबके बिगड़े हुए सब काम सँवारे मोहन।
 इस तरफ भी कृपा की दृष्टि हो मोहन।
 कुछ हमारी भी सुनो आके ओ मोहन।
 हो गई तितर वितर हसरत हमारी।
 दिल की दिल में ही रही तमन्ना दिल की
 ज्ञान की राह जमाने को बताई तूने।
 मुग्ध हो गया बंसी जो बजाई तूने।
 खुद परस्ती न रही कंस की हस्ती न रही।
 न हुआ है न होगा कोई तेरा जानी भी।
 धर्म का आज कहीं जिक्र नहीं नाम नहीं।
 आओ सुदामा की गरीबी को मिटाने वाला।
 काम हर शरुस के हर वक्त में आने वाला।
 अब नहीं ताब हमें हिज्र की प्यारे आजा।
 आजा गोवर्धन को उठाने वाले आजा॥

59

हे दयामय आप ही संसार के आधार हो।
 आप ही करतार हो हम सब के पालन हार हो॥
 जन्मदाता आप ही माता पिता भगवान हो।
 सर्व सुखदाता हो धाता प्राण तन धन त्राण हो॥
 आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं।
 बिन कृपा के शान्ति सुख का सार पा सकते नहीं॥
 दीजिये वह मति बने हम सब गुणी संसार में।
 मन हो मंजुल प्रेम में और तन लगे उपकार में॥

60

खुल गये भाग हमारे गुरुजी दरशन पाये तुम्हारे।
 तुम ही माता तुम ही पिता हो हम हैं बालक तुम्हारे।
 तुम ही ब्रह्मा तुम ही विष्णु हम हैं सेवक तुम्हारे॥
 तुम ही चंदा तुम ही सूरज हम हैं नौलख तारे।
 तुम ही गंगा तुम ही जमुना हम हैं नदिया नाले॥

61

ओ करुणाकर तुम्हारा बृज में फिर अवतार हो जाए
 जो भक्ति का चमन उजड़ा हुआ गुलजार हो जाए
 गरीबों को उठलो साँवरे गर अपने हाथों में
 तो इसमें शक नहीं दीनों का जीवन उद्धार हो जाए
 लुटाकर दिल जो बैठे हैं वह रो रो कर यों कहते हैं
 किसी सूरत से सुन्दर श्याम का दीदार हो जाए
 बजादो रस भरी अनुराग की वह बाँसुरी अपनी
 कि जिसकी तान से हर तन में पैदा तार हो जाए
 पड़ी भवसिंधु में दीनों की दृग ये बिंदु की नैया
 कन्हैया तुम सहाय दो तो बेड़ा पार हो जाए

62

अरे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।
 किराये का घर खाली करना पड़ेगा॥
 आयेगा नोटिस जमानत न होगी।
 पल्ले में तेरे अमानत न होगी॥
 पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा।
 यमराज की जब अदालत चढ़ेगी॥
 पूछेगा हाकिम तो क्या क्या कहोगे।
 यमदूत के डंडों को सहना पड़ेगा॥

63

खड़े हम दर पर दरशन को।
 खबर कर दो रघुनन्दन को।
 लख चौरासी स्वांग धर नाना कष्ट उठाय।
 जन्म मरण से हैं दुखी गिरे शरण में आय।
 झुकाये हैं हम गरदन को। खबर.....
 यदपि आपने ही दिया नाम रूप गुण गाय।
 किन्तु एक भक्ति बिना है यह सब बेकार।
 करे क्या लेकर इन धन को। खबर.....
 खेल तमाशो में सदा दौड़ दौड़ मन जाय।
 भजन भयंकर सा लगे बुद्धि भ्रष्ट हो जाय।
 कहाँ तक रोवे करमन को। खबर.....
 नौका पापन सौं भरी आन पड़ी मझधार।
 डूबी कुछ डूबत चहे एक तुम्हीं आधार।
 उबारो राधेश्याम जन को। खबर.....

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है
 श्रीराधारमण नन्दलाल मेरो है



जब तेरी मेहरबानी मेहरबाँ सारा जमाना ।
 सारा जमाना है ।
 तू तो है इस बाग का माली, करता है जग की रखवाली ।
 बुलबुले (सैयाद) भगवन सारा जमाना । सारा जमाना है ।
 तेरे ही बन्दे कहलाये ।
 हाथ पसारन किस दर (घर) जायें ॥
 पैदा किये की लाज भगवन, सारा जमाना । सारा जमाना है ।
 करनी चाहिये उसकी पूजा । उसके बराबर और न दूजा ।
 शरण गहे की लाज भगवन । तेरा सहारा, तेरा सहारा है ।



मोरा मन दरपन कहलाये ।
 भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाये ॥
 मन ही देवता मन ही ठाकुर मन से बड़ा न कोय ।
 मन उजियारा जब जब होवे, जग उजियारा होय ॥
 इस उजले दरपन पर प्राणी धूल न जमने पाये ।
 सुख की कलियाँ दुख के काँटे मन सब का आधार ।
 मन से कोई बात छिपे ना मन के नैन हजार ॥
 जग से चाहे भाग ले कोई, मन से भाग न पाये ।



भजो रे भैया राम गोविन्द हरी ।
 जप तप साधन कछु नहीं लागत, खरचत नहीं दमड़ी ।
 संतत संपत सुख के कारन, जासों भूल परी ।
 कहत कबीरा राम न जा मुख, ता मुख धूल भरी ॥



मरना तेरी गली में जीना तेरी गली में,
 लुट जायेगी हमारी दुनियाँ तेरी गली में ।
 आये हैं तेरे दर पर हम जिन्दगी लुटाने ।
 तू देखे या न देखे तू जाने या न जाने ।
 हम तो करेंगे पूरा वादा तेरी गली में ॥ मरना.....
 दिल से तेरी मुहब्बत कम उम्र भर न होगी ।
 हम तुझपे मर मिटेंगे, तुझको खबर न होगी ।
 मरने के बाद होगा चरचा तेरी गली में ॥ मरना.....



हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें ।
 दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें ।
 मुश्किलें पड़ें तो हमपे इतना करम कर ।
 जियें तो धरम पर चलें तो धरम पर ।
 खुद पे हौसला रहे बदी से ना डरें ॥ दूसरों की.....
 भेदभाव अपने दिल के साफ कर सकें ।
 दोस्तों से भूल हो तो माफ कर सकें ।
 झूठ से बचे रहें औ सच का दम भरें ॥ दूसरों की.....



भजो राधा रमण हरि गोविन्द जी ।
 मेरे गोविन्द जी करी तुम्हारी झाँकी मेरे नयना सफल हुये ॥
 मेरे गोविन्द जी गाई तुम्हारी महिमा मेरी जिह्वा सफल हुई ॥
 मेरे गोविन्द जी सुनी तुम्हारी गीता मेरे कान सफल हुये ॥
 मेरे गोविन्द जी न्हायी तुम्हारी गंगा मेरी काया सफल हुई ॥
 मेरे गोविन्द जी किये तुम्हारे तीरथ मेरे पैर सफल हुए ॥

70

सब से ऊँची प्रेम सगाई।
 दुरयोधन की मेवा त्यागी साग विदुर खाई॥
 जूठे फल सबरी के खाये बहु विधि स्वाद बताई।
 प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई॥
 राजसुयज्ञ युधिष्ठिर कीनों तामें जूँठ उठाई।
 प्रेम के बस पारथ रथ हाँक्यो भूलि गये ठकुराई॥
 ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई।
 सूर कूर यहि लायक नाही कँह लागि करौं बढ़ाई॥

71

करी गोपाल की सब होय।
 जो अपनो पुरुषारथ मानत, अति झूठो है सोय॥
 साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल, यह सब डारहु धोय।
 जो कछु लिखि राखी नंदनन्दन मेदि सकै नहिं कोय॥
 दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहि मरत हौ रोय।
 सूरदास स्वामी करुनामय, स्याम चरन मन पोय॥

72

जय राधे जय राधे राधे जय राधे घनश्याम हरी।
 जय सीता जय सीता सीता जय सीता श्रीराम हरी॥
 जय गौरी जय गौरी गौरी जय गौरी जय पार्वती॥
 जय शम्भू जय शम्भू शम्भू जय शम्भू कैलाशपती॥
 राम पुजारी पर उपकारी महावीर बजरंग बली।
 केसरिन्दन सब दुःख भंजन दुष्ट निकंदन दनुजदली॥

73

प्रभु तेरो नाम जो ध्याये फल पाये सुख लाये।
 मिल जाये तेरो नाम.....
 तेरी दया हो जाये तो दाता जीवन धन मिल जाये।
 मिल जाये तेरो नाम.....
 तू दानी तू अन्तर्यामी, तेरी कृपा हो जाये तो स्वामी।
 हर बिगड़ी बन जाये, जीवन धन मिल जाये।
 मिल जाये तेरो नाम.....
 बस जाये मोरा सूना अँगना। खिल जाये मुरझाया कँगना।
 जीवन में रस लाये, जीवन धन मिल जाय।
 मिल जाये तेरो नाम॥

74

भज मन राम चरन सुखदाई।
 जिहि चरनन से निकसी सुरसरि संकर जटा समाई।
 जटा संकरी नाम पर्यो है त्रिभुवन तारन जाई॥
 जिन चरनन की चरन पादुका भरत रह्यो लव लाई।
 सोई चरन केवट धोई लीने तब हरि नाव चलाई।
 सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
 सोई चरन गौतम ऋषि नारी परसि परमपद पाई॥
 देउ कबन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई।
 सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई॥
 कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई।
 रिपु को अनुज विभीषण निसिचर परसत लंका पाई॥
 सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सेष सहस मुख गाई।
 तुलसिदास मारुतसुत की प्रभु निज मुख करत बढ़ाई॥



तेरी बन जायेगी राम गुण गाये से।
ध्रुव जी की बन गई प्रह्लाद की बन गई,
द्रौपदी की बन गई चीर के बढ़ाये से।
धन्ना की बन गई सदन की बन गई,
मीरा की बन गई कृष्णगुण गाये से।
ब्रह्मा की बन गई विष्णु की बन गई,
नारद की बन गई वीणा के बजाये से।।
अहिल्या की बन गई शबरी की बन गई,
विभीषण की बन गई शरण में आये से।
विदुर की बन गई सुदामा की बन गई,
मोरध्वज की बन गई आरा चलाये से।।
चेता की बन गई सेना की बन गई,
नरसी की बन गई हुंडी भुनाये से।
गोरख की बन गई कबीरा की बन गई,
हनुमान की बन गई सीया सुध लाये से।।



रे मन मूरख जनम गँवायो।
कर अभिमान विषय रस रँच्यो नाम सरन नहीं आयो।।
यह संसार फूल सेमर को सुन्दर देख लुभायो।
चाखन लाग्यो रुई गई उड़ि हाथ कछू नहीं आयो।।
कहा भयो अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो।
सूरदास हरिनाम भजन बिनु सिर धुनि धुनि पछतायो।।



नाम-धुनि

1. जय सीता राम, सीता राम, सीता राम जय सीता राम।
जय राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय राधेश्याम।।
2. सीताराम मनोहर जोड़ी। जय दशरथ नन्दन जनक किशोरी।।
3. राधे श्याम मनोहर जोड़ी। जय कृष्णा वृषभानु किशोरी।।
4. राम राम रामा रमापति राम।
राम रमापति राम रमापति राम रमापति राम राम।।
5. गोविन्द हरे गोपाल हरे।
जय जय प्रभु दीन दयाल हरे।।
6. श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
7. एक बार मेरे मन राधे गोविन्द कहो।
राधे गोविन्द कहो बाल मुकुन्द कहो।।
8. श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
हरि बोल हरि बोल श्रीराधे गोविन्द।।
9. जय मीरा के गिरिधर नागर तुलसीदास के सीताराम।
जय नरसी के साँवरिया जय सूरदास के राधेश्याम।।
10. श्रीराम जय राम जय जय राम।



रघुपति राघव राजा राम जय गोविन्द माधव राजाराम।।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त-लड़त गज हारे राम।। जय
जौ भर सँड़ रही जल ऊपर नंगे चरण पधारै राम।। जय
शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल रुचि रुचि भोग लगाये राम।। जय
दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर खाये राम।। जय



मेरा गोपाल गिरधारी जमाने से निराला है।
 सँवलिया है सलोना है न गोरा है न काला है।
 कभी सपनों में तुम आना कभी रूपोश हो जाना।
 तुम्हारी बाल मूरत ने अजब धोखे में डाला है।
 तुम्हें मैं भूलना चाहूँ मगर भूला नहीं जाता।
 तुम्हारी मोहिनी मूरत ने कुछ जादू सा डाला है।
 तुम्हारे तो हजारों हैं मेरे तो एक तुम ही हो।
 तुम्हीं बोलो जहाँ मैं कौन मेरी सुनने वाला है।।



छोटी छोटी गउएँ छोटे छोटे ग्वाल, छोटे से मेरे मदन गोपाल।।
 कहाँ जायें गउएँ कहाँ जाँय ग्वाल, कहाँ को जाँयें मेरे मदन गोपाल।।
 पूरब जाँये गउएँ पच्छिम जाँये ग्वाल, दक्खिनको जाँयें मेरे मदन गोपाल।।
 क्या खायें गउएँ क्या खायें ग्वाल, क्या खायें मेरे मदन गोपाल।
 घास खायें गउएँ, दूध पीयें ग्वाल, माखन खायें मेरे मदन गोपाल।।
 कहाँ सोयें गउएँ, कहाँ सोयें ग्वाल, कहाँ सोयें मेरे मदन गोपाल।
 बाहर सोयें गउएँ, भीतर सोयें ग्वाल, पलने में सोयें मेरे मदन गोपाल।।



परम धन राधा नाम अधार।

जाहि स्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारम्बार।।
 जंत्र मंत्र और वेद तंत्र में, सबै तार कौ तार।
 श्रीसुक प्रगट कियो नहिं याते, जानि सार को सार।।
 कोटिन रूप धरे नंदनंदन, तऊ न पायौ पार।
 व्यासदास अब प्रगट बखानत, डारि भार में भार।।



फूलों में सज रहे हैं श्रीवृन्दावन बिहारी।
 और संग सज रही हैं वृषभानु की दुलारी।।
 टेढ़ा सा मुकुट सिर पर रख्खा है किस अदा से।
 करुणा बरस रही है करुणा भरी निगाह से।।
 बिन मोल बिक गई हूँ जबसे छवि निहारी।। फूलों।।
 बड़ियाँ गले में डाले जब दोनों मुस्कुराते।
 सबको ही प्यारे लगते सबके ही मन को भाते।
 इन दोनों पे मैं सदके इन दोनों पे मैं वारी।। फूलों।।
 शृंगार तेरा प्यारे शोभा कहूँ क्या उसकी।
 इन पे गुलाबी पटका उन पे गुलाबी साड़ी।
 नीलम से सोहैं मोहन स्वर्णिम सी सोहे राधा।
 इत नन्द का है छोरा उत भानु की दुलारी।
 चुन चुन के कलियाँ जिसने बंगला तेरा बनाया।
 दिव्याभूषणों से जिसने मोहन तुम्हें सजाया।
 उन हाथों पे मैं सदके उन हाथों पे मैं वारी।। फूलों।।



अब की टेक हमारी, लाज राखो गिरिधारी।
 जैसी लाज रखी पारथ की भारत जुद्ध मैझारी।।
 सारथि होके रथ को हाँक्यो चक्र सुदर्शन धारी।
 भगत की टेक न टारी.....अबकी
 जैसी लाज रखी द्रौपदि की होन न दीन उधारी।
 खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके, दुस्सासन पचिहारी।।
 चीर बढ़ायो मुरारी.....अबकी
 सूरदास की लज्जा राखो अबकी है रखवारी।
 राधे राधे श्रीवर प्यारी, श्रीवृषभानु दुलारी।।
 सरन तकि आयो तुम्हारी.....अबकी

84

हे गोविन्द हे गोपाल अब तो जीवन हारे।
 हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे॥
 नीर पीवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे।
 सिंधु बीच बसत ग्राह चरन गहि पंछारे॥ हे..
 चार प्रहर युद्ध भयो लह गयो मझधारे।
 नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे। हे..
 द्वारिका में शब्द भयो शोर भयो भारे।
 शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ लड़ सिधारे। हे..
 सूर कहे श्याम सुनो शरण हौं तिहारे।
 अब की बार पार करो नंद के दुलारे। हे..

85

ऊधो मैंने सब कारे अजमाये।
 कोयल के सुत कागा पाले, हँसि हँसि गोद खिलाये।
 पंख जमे जब ऊड़न लागे, अपने हि कुल को धाये।
 फिर पाछे नहीं आये.....
 कारे सर्प पियरे में पाले, हँसि हँसि दूध पिवाये।
 जब सुधि आई अपने कुल की, अंगुरी में डसि खाये॥
 कारे रंग भँवरवा के होये, देखत ही मुस्काये।
 जब वह खिल कर परी धरनि पर, फिर पाछे नहीं आये।
 कारे केस सीस पर राखे, तेल फुलेल लगाये।
 ये कारे भये नहीं आपने, सेत रंग बरसाये।
 कारे की परतीति न करियो, कारे जहर भराये।
 सूर कहें कारे की महिमा, कारे से काल डराये॥ ऊधो॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।

86

घनश्याम आया री मेरे घर श्याम आया री॥
 अधर पर है गान उसके, हाथ में मुरली,
 पुष्पवेणी गूँथ कर उपहार लाया री।
 लाज घूँघट में छिपी हूँ मिलन बेला में,
 मान अब कैसे करूँ मनुहार लाया री॥
 रास रचने को मुझे तैयार करता है,
 निरखता मुझको निरन्तर नयन भरता है।
 नूपुरों में नृत्य भर वह दुमकता आया,
 नयन चुपके मूँद कर मुझको रिझाया री॥

87

छलिया नन्द को हमें तो जोगनिया बनाय गयो री।
 हमें तो वैरागन बनाय गयो री।
 मोर मुकुट पीताम्बर सोहे जाके,
 हमारे सिर जटा धराय गयौ री।
 कानो में कुण्डल गले वनमाला,
 हमारे अंग भभूति रमाय गयो री।
 आप तो जाय द्वारका धाये,
 हमें तो वृन्दावन बसाय गयो री।
 चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि,
 हमें तो हरिदासी बनाय गयो री।
 छलिया नन्द को हमें तो जोगनिया बनाय गयो री॥

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द
 हरे कृष्ण हरे राम श्रीराधे गोविन्द

88

आप बसौ बरसाने अली वृषभानु लली सुधि मेरी बिसारी।
कोमल चित्त दीनन के हित निज करो ये बान तिहारी।।
कान दिए सुनिए मम स्वामिनि दासी की आस पुजावन हारी।
मोहि देहु यही ब्रज डोलौ करूँ तेरो नाम जपूँ नित श्यामा प्यारी।।
हेम सिंहासन हीर जड़े तेहि पै पट हैं अति मंद बिछाये।
सोलह सहस्र अली निकसी वृषभानु लली उत श्यामजू आए।।
आरती लै कोई गुंजन माल लिए तुलसी दल शीश नवाए।
स्वागत प्रेम सों मध्य बिठाई मैं भी रही फल नैनन पाए।।
ऐसे किशोरी जी नाहिं बने तुम कैसे सुधि मो बिसार रही हो।
हे अवनासिन दीनन स्वामिनि का मम बाट बिचारि रही हो।।
तेरे अवलोकन ऐसी दशा मोहें यों भवसिन्धु में डारि रही हो।
मो सम दीन अनेकन तारे वा श्रम से अब हारि रही हो।।
कीरति नन्दिनि कीजै कृपा कर जोरि कहूँ निज पास बसाओ।
सीस धरूँ धरनी विच स्वामिनि दे ललिते-ललिते समझाओ।।
मोय विशाखा बिसारो नहीं वृषभानु सुता को व्यथा ये सुनाओ।
ऐही कहो मिल आली सखी अब चरनन चेरी मोहि बनाओ।।

89

चलो रे मन गंगा जमना तीर।
गंगा जमुना निरमल पानी शीतल होत सरीर।।
बंसी बजावत गावत कान्हा संग लिये बलवीर।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुंडल झलकत हीर।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल पर सीर।।

हमारो धन राधा श्रीराधा श्रीराधा

90

गोपी-कृष्ण संवाद

डाके को डर लगे तुम्हें तो या मारग क्यों आओ जी।
बड़ी लुटेरिन तुम मन लूटो नैन सैन के बान दे
कहा मन गोरस कहा भूषण धन जो हम लूटन आई जी
अरी, मन ने चंद अमीरस ताते सकल रसन को राई जी
तुम जो कही कहा मन भूषण मन भूषण अनमोल
सकल विश्व के भूषण प्यारी ज्ञान तराजू तोल
मन को पलड़ा भारी प्यारी वो तू सत्य प्रमाण दे
ऐसी बात बनावो लाला कौने तुम सिस्राओ जी
हम तो सिखे सिखाये प्यारी चितै न मोर चिताओ जी
निर उत्तर है गई सवै रस गोरस माट बढ़ाय कै
सखा सहित हरि खात परस्पर भये सबके मन भाये जी
सन्त कृष्ण गोपिन सों झगरत जो मुनि लखे न ध्यान दे
मन अटक्यो मेरो मोहन वसन में छवि निरखी जब लाल
स्याम लेहु कोई स्याम री भूल गई दधि नाम
क्यों रोके है गैल हमारी लाल विहारी जान दे
छैल छबीली गुणगरवीली रूप रसीली दान दे
कैसो दान, सुनो दै कान छाड़ो तुम लँगराई जी
गोरस दान दधि को दान माखन और मलाई जी
कान्ह वा सखी की तुमने मोरी क्यों कलाई जी
हमने माँगो दान वाने गारी क्यों सुनाई जी
हम ना तेरी धौंस सहेंगी, सुन ले लाला कान दे
छैल छबीली गुण गरवीली, रूप रसीली दान दे
याही ते तन कारो लाला लैलै दान कुदान जी
क्यों छूटेगो इन पापन ते तीरथ जाओ न धाम जी
कारे विना न तू लागे नीकी कैसे पुतरिया स्याम जी
गोरज गंगा न्हाऊँ जाके तीरथ को ना काम जी

पापीन के पापन कूँ काटो सुन्दर गीता ज्ञान दे
जेही ज्ञान तुम्हारो लाला निसदिन डारो डाके जी
चोरी ऊपर सीना जोरी कर-कर नैना बाँके जी।
हम तो माखन चोर सखी तुम मन और नैन चुराओ जी।



अष्टपदी गीत गोविन्द

वदन विदारन दारुण हय वाहन ये
धृत करवाल कराल, जय जय राम हरे।
भुवनानन्द मुकुन्द, जय जय राम हरे।
नभदाखण्डल शेखर धृत मन्दर ये।
संतत जगदाधार जय जय राम हरे
हेम नयन संहारन खल दारुण ये।
धृत जगती पर भार जय जय राम हरे।
कनककशिपु कर घर्षण घनकर्षण ये
भुवनानन्द मुकुन्द जय जय राम हरे।
पदनख नीरज पावन वटु वामन ये।
अजिन दण्डधर देव जय जय राम हरे।
पापी भूप निकन्दन भृगुनन्दन ये।
धृत कोदण्ड कुठार जय जय राम हरे।
विहित सुजन संभावन जित रावण ये
रघुकुल कमल दिनेश जय जय राम हरे।
मुर चाणूरविनाशक रिपु शासक ये।
सिन्धु सुता संचार जय जय राम हरे।
वेद विहित विधि खण्डन सुर मण्डन ये
दनुज भेदकर देव जय जय राम हरे।
श्री जय देव विधायक युत सायक ये।
कुरु कुशलं प्रणतेश जय जय राम हरे।



प्रेम से मिले हैं दोनों देह को विसारी जी।
ललिता जी ने वार-वार आरती उतारी जी।
राधा कृष्ण गावो साज यही जग में सार जी।
हे वृन्दावन वारी प्यारी खोलो न किवाड़ जी।
राधा रानी राधा रानी ठाढे टेढ़े द्वार री।
राधा बोली कौन ? मेरो नाम घनश्याम जी।
पावस में घनश्याम आवे शारद कहा काम जी।
लाल हूँ री लाल ! लाल राजा के खजाने में।
माधव हूँ ! महीना पाँच माधव ऋतु के आने में।
जग को हूँ सिरदार ! सिर विन जीवे को संसार जी।
हरी हूँ ! तो वन को जाओ, वानर से डराऊँ जी।
कालीनाथ मेरो नाम ! शंकर को न चाहूँ जी।
गिरधारी हूँ ! राम पास हनुमत गिरधारी जी।
जगरक्षक हूँ ! तो पैहरो दीजे तोरो क्यों किवार जी।
वंसीधर हूँ ! मछली पकड़ो जमुना के कगार जी।
मैं हूँ कृष्ण चन्द्र ! कहूँ चन्द्र होत कारो जी।
मैं हूँ री गोपाल ! जाओ वन में गायेँ चारो जी।
जसुदा को दुलारो मैं मोर पक्ष वारो जी !
अपने पक्ष वारे को हमारे न गुजारो जी।
माखन चोर ! पकड़े जइहो घूमे पहरेदार जी।
मैं हूँ तेरो दास ! प्यारी ज्यादा न सताओ जी।
मान छोड़ दौड़ी बोली आओ प्यारे आओ जी।

जसोदा ने कारी रात में जायो
ताते कारो हि रूप हरि पायो

93

राधा सूबेदार बनी, सब गोपी बनी सिपाही।
 राधा ने नंद पौर पे दर्ई आवाज लगाय।
 नंद गोप कैह कू गयो बता कृष्ण की माय।
 सदा रहो अलमस्त भजन में पीके बूटी बूटी
 काहे की कूंडी काहे को सोटा काहे की रगड़ो तुम बूटी
 काहे का रुमाल बना कर काहे की छानो तुम बूटी
 धर्म की कूंडी ज्ञान का सोटा नाम की रगड़ो तुम बूटी।
 नैना का रुमाल बना कर प्रेम की छानो तुम बूटी।
 ब्रह्मा ने पी शंकर ने पी लई उमा ने पी लई यह बूटी
 वाल्मीकि ने ऐसी पी लई ब्रह्म भये माया छूटी
 ध्रुव ने पी प्रह्लाद ने पी लई नारद पी गये वह बूटी
 हनूमान ने ऐसी पी लई सोने की लंका फूकी।
 शेष ने पी सनकादि ने पी लई सारद ने पी लई पूरी
 भक्त सुदामा ने ऐसी पी लई रतनन की बन गई कूटी
 धन्ना पी लई सदना पी लई मीरा पी गई बूटी
 दास कबीरा ने ऐसी पी लई रोम रोम में फूटी।

94

बिलइया रांड लपकी, बचना रे साधो।
 ब्रह्मा पे लपकी विष्णु पे लपकी, शंकर पे तीन बार झपकी।
 ऊपर गगरी नीचे कूआ, जाने कहाँ से आय टपकी।
 अरबन, खरबन सुर नर मुनि के, मन मूसेन को गपकी।
 जित तित हौंडी ताकत डोलत, करे मलाई जप-तप की।
 कहे कबीर सुनो भई साधो, सतगुरु देख के झपकी।

राधे श्याम मनोहर जोड़ी। जय कृष्णा वृषभानु किशोरी।।

95

झूम झूम मनमोहन रे मुरली मधुर सुनाजा
 तेरे दरस के प्यारे नैना एक पल दरस दिखाजा
 गोकुल सूना मथुरा सूनी सूने ब्रज के झूले
 भूल गया तू मोहन हमको हम ना तुमको भूले
 हमसे तुझको लाखों भगवन् तुझसा कौन है दाता
 छोड़ के सारे नाते हमने तुझ संग जोड़ा नाता
 फिर पनघट पै जमुना के तट आके रास रचाजा
 भँवर में नैया पड़ी खिचैया अब तो पार लगाजा

96

गोवर्धन गिरिधारी जी टेरे सुनिये श्याम हमारी जी
 टेरे सुनी प्रह्लाद भक्त की प्रगटे खम्भा फारी जी
 टेरे सुनी प्रभु भक्त विभीषण बने लंक अधिकारी जी
 टेरे सुनी प्रभु द्रुपद सुता की साड़ी भये गिरधारी जी
 टेरे सुनी नरसी मेहता की हुण्डी तुरत स्वीकारी जी
 टेरे सुनी मीराबाई की गिरधर लाल पुकारी जी
 अब गिरिराज टेरे सुन लीजै हम सब शरण तुम्हारी जी

97

बाँसुरिया कहाँ भूल आये कुँवर कन्हैया।
 रैन अंधेरी दुःख का समुन्दर कासे कहुँ अब दैया
 बीच भँवर में डगमग डोले श्यामा मोरी नैया.....।
 देखो देखो कृष्ण मुरारी कौन कहाँ से आई
 रो रो पुकारे सब नर नारी और पुकारे गैया.....।
 श्याम सलोने कृष्ण मुरारी गोरी गोरी राधा प्यारी
 अपने मन में खुश हो हो कर कहे यशोदा मैया.....।

98

मदनगोपाल शरण तेरी आयो
चरण कमल की सेवा दीजै। चाकर करि राखो घर जायो।
धन्य धन्य मात-पिता सुत बन्धु। धन्य गुरु जिन हरि नाम सुनायो।
धन्य वह देश धन्य कुल वाको। धन्य जननी जिन गोद खिलायो।
जे जन विमुख भये गोविन्द सों। जनम अनेक भ्रमत दुख पायो।
श्रीभट के प्रभु दियो अभय पद। जम डरप्यो जब दास कहायो।

99

मोपे काहे को झुरत ब्रज नारी।
तन टेढे, मेरो सब कोई जाने, परसत भई अधिकारी।
फलन मौझ जहि करुई तूमरी, लै घूरे पै डारी।
हाथ परी काहू कारीगर के, बाजत राग दुवारी।
सूर स्याम प्रभु गिरिधर नागर अपने हि हाथ संभारी।

100

ऊधो सुनि सुनि आवत हँसी।
कहाँ तो ब्रह्मादिक के ठाकुर, कहाँ कंस की दासी।
सुर नर मुनि की कौन चलावे, शंकर करत खवासी।
जाके चरण कबहुँ कमला नहिं छोड़त, जुगवत रहत रमा सी।
अगम अखण्ड अगोचर जोई, शेष शीश को बासी।
सूर सोई कुब्जा बस कीनो डार प्रेम की फाँसी।

एक बार मेरे मन राधे गोविन्द कहो
राधे गोविन्द कहो बाल मुकुन्द कहो

101

चितैबो छोड़ दे री राधा, राम कहत चल भाई रे।
नाहै तो भव बेगार में परिहौ छूटत अति कठिनाई रे।
बांस पुरान साज सब अटखट, सरल तिकोन खटोला रे।
हमें दहल कर मूढ़ करमचंद, मंद मोल विन डोला रे।
विषम कहार मार मद माते, चले न पाँव बटोरा रे।
x के सब पार x ज राख डार x
x रा के प्रभु x न बलिहार x
जस जस चलिय दूर तस तस है वासन भेट लगाऊ रे।
मारग अगम संग नहि सम्बल, नाम गाम सब भूला रे।
तुलसी दास, भव त्रास हरो अब होऊ राम अनुकूला रे।

102

नवल वसन्त नवल श्रीवृन्दावन नवलहिं फूले फूल।
नवलहिं भ्रमर नवल पुष्परस नवलहिं नवल पवन की झूल।
नवल कृष्ण नवल श्रीगोपिका नवलहिं सजै दुकूल।
नवलहिं वाजै बाजे श्रीभट कालिन्दी के कूल।

103

मदमातो छैला होरी को, मदमातो।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, ऐरी जाके माथे पै बेन्दा रोरी को।
मन्द मन्द मुस्कात नवेलो, हॉरी जे तो रसिया है काहू गोरी को।

मदमातो.....

लटक लटक झुकि रंग बरसावत, उछटावत रंग झोरी को।
बालप्रभु गारीन में री गावे, जे तो लै लै नाम किसोरी को।

मदमातो.....



म्हारो प्रणाम बाँके विहारी को ।
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडल अलकाधारी को ॥
अधर मधुर से मुरली बजावे रीझे रिझावे राधाप्यारी को ।
यह छवि देख मगन भई मीरा मोहन गिरिवर धारी को ॥



आली री मेरे नैनन बान पड़ी ।
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत उर विच आन मड़ी ॥
कबकी ठड़ी मैं पंथ निहारूँ अपने भवन खड़ी ।
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ जीवन मूल जड़ी ।
मीरा गिरिधर हाथ बिकानी लोग कहें बिगड़ी ॥



माई री मैंने गोविन्द लीनो मोल ।
कोई कहे कारो कोई कहे गोरो लियो है आँखें खोल ॥
कोई कहे हलको कोई कहै भारी लियो है तराजू तोल ।
कोई कहे चोरी कोई कहे चुपके लियो है बजाके ढोल ॥
कोई कहे सस्तो कोई कहे मैंहगो लियो रतन अनमोल ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर पूर्व जन्म को कोल ॥



बसो मोरे नैनन में नंदलाल ।
मोहनी मूरत सांवरी सूरति नैणा बने विसाल ।
अधर सुधारस मुरली राजत उर वैजन्ती माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नूपुर शब्द रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगत वछल गोपाल ॥



फागुन के दिन चार रे होरी खेल मना रे ॥
बिन करताल पखावज बाजै अनहद की झनकार रे ।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै रोम रोम रणकार रे ॥
सील संतोष की केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अम्बर बरसत रंग अपार रे ॥
घट के सब पट खोल दिये हैं, लोकलाज सब डार रे ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कँवल बलिहार रे ॥



मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई ।
जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥
तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई ।
छाँड़ि दई कुल की कानि कहा करिहैं कोई ॥
संतन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ।
चुनरी के किये दूक ओढ़ लीन्हीं लोई ॥
मोती मँगे दिये उतार वनमाला पोई ॥
अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेल बोई ।
अब तो बेल फैल गई आनंद फल होई ॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई ।
दासी मीरा लाल गिरिधर तारो अब मोही ॥

जय मीरा के गिरिधर नागर तुलसीदास के सीताराम ।
जय नरसी के साँवरिया जय सूरदास के राधेश्याम ॥



हरी तुम हरो जन की भीर।
 द्रौपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर॥
 भगत कारण रूप नरहरि धर्यो आप सरीर।
 हिरण्याकुस मारि लीन्हों धर्यो नाहिन धीर॥
 बूढ़तो गजराज राख्यो कियो बाहर नीर।
 दासि मीरा लाल गिरिधर चरन कैवल पर सीर॥



मीरा के प्रभु साँची दासि बनाओ।
 झूठे धन्धों से मेरा फन्दा छुड़ाओ॥ मीरा॥
 लूटे ही लेत विवेक का डेरा।
 बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा।
 हाय राम नहिँ कछु बस मेरा।
 मरती हूँ विवस प्रभु धाओ॥ मीरा॥
 धर्म उपदेश नित सुनती हूँ मन कुचाल से डरती हूँ।
 सदा साधुसेवा करती हूँ सुमिरन ध्यान में चित धरती हूँ॥
 भक्ति मार्ग दासी को दिखाओ॥ मीरा॥



हेरी मैं तो दरद दिवानी मेरो दरद न जाने कोय।
 घायल की गति घायल जाने जो कोई घायल होय॥
 जौहरि की गति जौहरि जाने की जिन जौहरि होय।
 सूली ऊपर सेज हमारी किस विधि सोवण होय॥
 गगन मंडल पर सेज पिया की, किसविध मिलणा होय।
 दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिला नहिँ कोय॥
 मीरा की प्रभु पीर मिटे जद बैद साँवलिया होय॥



नातो नाम को जी म्हाँसू तनक न तोइयो जाय।
 पाना ज्यों पीली पड़ी रे लोग कहैं पिण्ड रोग।
 छाने लाँधन में किया रे, राम मिलन के जोग॥
 बाबल बैद बुलाइया रे पकड़ दिखाई म्हारी बाँह।
 मूरख बैद मरम नहिँ जाणै कसक कलेजे माँह॥
 जा बैदा घर आपने रे म्हारो नाम न लेय।
 मैं तो रोगी हरी प्रेम की रे तूँ काहे की औषध देय॥
 माँस गल गल छीजिया रे, करक रहा गल आहि।
 आँगुरिया की मूँदड़ी म्हारे आवण लागी बाँह॥
 रह रह पापी पपीहरा रे पिव को नाम न लेय॥
 सुन पावै कोई विरहिनी, पिव कारण जिय देय।
 खिण मन्दिर खिण आगणे रे खिण खिण ठाड़ी होय।
 घायल ज्यँ घूमूँ खड़ी म्हारी विथा न बूझै कोय।
 काढ़ कलेजा मैं धरूँ रे कागा तू लै जाय।
 ज्यौँ देसा म्हारा पी बसै रे वे देखै तू खाय॥
 म्हारै नातो नाम को रे और न नातो कोय।
 मीरा व्याकुल विरहिणी रे, दरसन दीजो मोय॥



दरस बिना दूखण लागे नैन, प्रभुजी।
 जब से तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहुँ न पायो चैन।
 सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपै मीठे लागे बैन।
 विरह कथा कासों कहूँ सजनी बह गई करवत अैन।
 कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन।
 मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे दुख मेटन सुख दैन॥



भज ले रे मन गोपाल गुना, गोविन्द गुना ।।
अधम तरे अधिकार भजन सँ, जोड़ आये हरि की सरना ।
अबिस्वास तो साखि बताऊँ, अजामील गणिका सदना ।
जो कृपाल तन मन धन दीनों, नैन नासिका मुख रसना ।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिर्यो एक छिना ।
बालापन सब खेल गमायो, तरुण भयो तब रूप घना ।
बृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ।
गज अरु गीधहु तरे भजन सँ, कोउ तर्यो नहिं भजन बिना ।
घना भगत पीपामुनि सिवरी, मीरा हू की करो गणना ।।



पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो ।
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो ।
खरचै न खँटे कोई चोर न लूटे दिन दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव केवटिया सत्गुरु भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख हरख जस गायो ।।



आली री महानै लागे वृन्दावन नीको ।
घर घर तुलसी ठाकुर सेवा दरसन गोविन्द जी को ।।
निरमल नीर बहत जमुना में भोजन दूध दही को ।
रतन सिंहासन आप विराजै मुकुट धरे तुलसी को ।।
कुंजन कुंजन फिरत राधिका शबद सुनत मुरली को ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर भजन बिना नर फीको ।।



कोई कहियो रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की ।
आप न आवे लिख नहिं भेजे वाण पड़ी ललचावन की ।
उर दोउ नैन कह्यो नहिं मानै नदिया बहै जैसे सावन की ।
कहा कहूँ कछु बस नहिं मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की ।
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे चेरी भइ हूँ तेरे दाँवन की ।।



आली री मेरे नैना बाण पड़ी ।
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।
कबकी ठड़ी पंथ निहारूँ अपने भवन खड़ी ।
कैसे प्राण प्रिया बिन राखूँ जीवन मूल जड़ी ।
मीरा गिरिधर हाथ बिकानी लोग कहैं बिगड़ी ।।



नाथ मैं थारो जी थारो ।
चोखो, बुरो, कुटिल और कामी, जो कुछ हूँ सो थारो ।
बिगड़यो हूँ तो थारो बिगड़यो, थे ही मने सुधारो ।
सुधर्यो तो प्रभु सुधर्यो थारो, थाँ सू कदैन न न्यारौ ।
बुरो बुरो मैं भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो ।
बुरो कहा कर मैं रह जास्यँ, नाँव बिगड़सी थारो ।
थारो हूँ थारो ही बाजूँ, रहस्यँ थारो थारो ।
आँगलियाँ मुँह परै न होवै, या तो आप विचारो ।
मेरी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं कछु म्हारो ।
मेरे बड़ो सोच यूँ लाग्यो, बिरद लाजसी थारो ।
जचै जिस तराँ करो नाथ! अब मारो चाहे तारो ।
जाँघ उघाड़्यो लाज मरोगा, ऊँडी बात बिचारो ।।



या ब्रज में कछु देख्यो री टोना ।
ले मटकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नंद के छौना ।
दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी ले लेहु री कोई स्याम सलोना ।।
विन्दावन की कुंज गलिन में आँखि लगाय गयो मनमोहना ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सुन्दर स्याम सुघर रस लौना ।।



साँवरिया मन भाया रे ।
सोहनी सूरत मोहिनी मूरत हिरदै बीच समाया रे ।
देस में ढूँढ़ा विदेस में ढूँढ़ा, अंत को अंत न पाया रे ।
काहू में अहमद काहू में ईसा, काहू में राम कहाया रे ।
सोच विचार कहै यकरंग पिया जिन ढूँढ़ा तिन पाया रे ।।



चाकर राखो जी म्हाने चाकर राखो जी ।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ नित उठ दरसन पासूँ ।
विन्दावन की कुंजगली में तेरी लीला गासूँ ।।
चाकरी में दरसन पाऊँ सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ तीनूँ बातों सरसी ।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै गल वैजन्ती माला ।
वृन्दावन में धेनु चरावै मोहन मुरली वाला ।।
हरे हरे नित बाग लगाऊँ विच विच राखूँ क्यारी ।
साँवरिया के दरसन पाऊँ पहन कुसुम्भी सारी ।।
जोगी आया जोग करन कूँ तप करने संन्यासी ।
हरी भजन कूँ साधू आया वृन्दावन के वासी ।।
मीरा के प्रभु गहर गभीरा सदा धरो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें प्रेम नदी के तीरा ।।



अब तो हरी नाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन चोरा, नाम धर्यो बैरागी ।।
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी वह गोपी ।
मूँड़ मुँड़ाय डोरी कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ।।
मात जसोमति माखन कारन, बाँधे जाके पाँव ।
स्याम किसोर भयो नव गौरा, चैतन्य जाको नाँव ।।
पीताम्बर को भाव दिखावे, कटि कौपीन कसै ।
गौर कृष्ण की दासी मीरा, रसना कृष्ण बसै ।।



सो मीराबाई काहे को साधा है योग ।
योग भी साधा मीरा जोग भी साधा, सो मीराबाई.....
जीते हैं काम और क्रोध ।
घर घर में मीरा तेरी ही चर्चा, सो मीराबाई.....
गलियों में मच रहा शोर ।
बार बार मीरा तोहे समझाऊँ, सो मीराबाई.....
लग जायेगा कोई रोग ।
तुलसीदास आस रघुवर की, सो मीराबाई.....
प्रभु चाहे सोई होय । सो मीराबाई.....



मनुवाँ राम नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित हरि चरचा सुनि लीजै ।।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ बहा चित्त से दीजै ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर ताहि के रंग में भीजै ।।



बसिवौ वृन्दावन कौ नीकौ ॥

घर घर तुलसी ठाकुर सेवा, दरसन गोविन्द जी कौ
निरमल नीर बहत जमुना को, भोजन दूध दही कौ
रतन सिंहासन आप विराजे मोर मुकुट प्रिय नीको
कुंजन कुंजन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरली को
मीरा के प्रभु गिरधर नागर भजन बिना नर फीको



बृजराज आज मनिहार बने ।

यहाँ आओ यहाँ आओ यहाँ लाओ चूड़ियाँ ॥

खोलो झोली दिखलाओ चूड़ियाँ ।

कुछ लाल चूड़ियाँ कुछ पीली चूड़ियाँ ॥

कुछ बुंदकीदार हरी चूड़ियाँ ।

कुछ ललिता ने पहनीं कुछ विशाखा ने पहनीं ॥

कुछ राधे ने पहनीं हरी चूड़ियाँ ।

कुछ गोकुल बिकीं कुछ मथुरा बिकीं ॥

कुछ बरसाने में बिकीं चूड़ियाँ ।

कुछ आप हैंसे कुछ नयन हैंसे ॥

कुछ नयनों के बीच हैंसा कजरा । बृजराज ॥



मनिहारी बन आये आप बनवारी मोरे रामा ।

ए मनिहारी मेरे ढिँग आवो अच्छी नीकी चूड़ियाँ मोहे पहिनावो ।

मोहन को लगे प्यारी... मोरे रामा ।

कौन गाँव की रहने वारी कौन गाँव ससुराल तुम्हारी ।

क्या है तुम्हारे नाम... मोरे रामा ॥

बरसाने की रहने वाली नन्दगाँव ससुराल हमारी ।

राधा हमारे नाम... मोरे रामा ॥



प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो ।

समदरसी प्रभु नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो ।

यह दुविधा पारथ नहीं जानत कंचन करत खरो ॥

एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ।

जब मिलि के दोउ एक बरन भये, सुरसरि नाम परो ॥

एक जीव एक ब्रह्म कहावत, सूरश्याम झगरो ।

अबकी बेर मोहे पार उतारो, नहीं पन जात टरो ॥



रघुबर तुमको मेरी लाज ।

सदा सदा मैं सरन तिहारी तुमहि गरीब निवाज ॥

पतित उधारन विरद तुम्हारे सवनन सुनी अवाज ।

हैं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥

अघ खंडन दुख भंजन जनके यही तिहारो काज ।

तुलसिदास पर किरपा कीजै भगति दान देहु आज ॥



तू दयालु दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।

हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी ॥

नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसो ।

मो समान आरत नहीं आरतहर तोसो ।

ब्रह्म तू हौं जीव तू ठाकुर हौं चेतो ।

तात मात गुरु सखा तू सब विधि हितू मेरो ॥

तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावै ।

ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै ॥

133

बस में होते आये, भगवान भगत के बस में।
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, गरुड़ छोड़कर धाये।
भगत ने ऐसा डाला फन्दा, आप बने हरनाई नंदा।
प्रेम से चरण दबाये। भगवान भगत के बस में।
केस पकड़ कर कंस पछाड़ा, साधू बनकर रावण मारा।
राज विभीषण पाये। भगवान भगत के बस में।
ध्रुव भगत पे जो कृपा कीन्हीं। भागीरथ को गंगा दीन्हीं।
स्वर्ग दिये पहुँचाये। भगवान भगत के बस में।
द्रोपदि जब दुष्टों ने घेरी, राखी लाज करी नहिं देरी।
आकर चीर बढ़ाये। भगवान भगत के बस में।
दुर्योधन की मेवा त्यागे। भूख लगी तब उठ घर भागे।
साग बिदुर घर पाये। भगवान भगत के बस में।
खम्भ चीर प्रह्लाद उबारा। हिरणाकुश को स्वर्ग सिधारा।
नरसिंह रूप धराये। भगवान भगत के बस में।

134

पथरा पड़े बुद्धि इन्दर की आया गौतम ऋषि के द्वार।
नारि अहल्या रूप सरूपी मन में किया विचार।
इन्द्रपुरी से इन्दर चल दिया चंदा ले लिया साथ॥
मुर्गा बन कर चंदा बोला गौतम के पिछवाड़।
धोती लोटा लिये बगल मुनि करन चले स्नान॥
गंगाजी जहाँ सोय रही थी पहुँचे मुनिवर जाय।
उलटे पाँवो लौट पड़े मुनि बड़ा हुआ अपराध॥
महलों अन्दर इन्दर पहुँचा नारि अहल्या पास।
इतने में वह मुनिवर आये दे दिया उसे शराप॥
नारी तू पत्थर की हो जा मेरा यही शराप।
राम चन्द्र अवतार लेंगे तब होगा तेरा उद्धार॥

135

रात सखी सपने में देखे दशरथ सुत और जनकलली री।
वे दोऊ ठाढ़े सिंह पौर पै मैं अपने घर से निकली री॥
देख रूप व्याकुल भई सजनी जानू मैं अंग भुजंग डसी री।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गल वैजन्ती माल पड़ी री॥
सपना ही साँचा सपना ही झूठ क्या मैं सपने की बात कहूँ री।
ना माने उठ देख री सजनी हाथों में मेरे मेंहदी लगी री॥
धनुष वाण लक्ष्मण लिये ठाढ़े खम्भ फाड़ कर कछनी कसी री।
रावण मार के लंका जारी तेतीसों के फन्द कटे री॥
रामदास मिलने की आशा राम सुमिर बैकुण्ठ पठै री।
रामचन्द्र की छवि क्या वरणों मानों अमृत घटा वरसी री॥

136

सुनि गजरुदन नैन भर आये।
औचक छाँड़ि चले कमलापति पीत वसन तन सुध बिसराये।
झगरत नाय चलत खगपति सों बृद्ध भयो तन वेग गँवाये।
गरुड़ छाँड़ि धाये कमलापति चक्र काटि झश अंग गिराये।
हे हरि, हे हरि कहत उठाये देवन सुमन वृष्टि झर लाये॥

137

रघुवीर मेरी सजनी प्यारा लगे।
छोटे छोटे तरकस छोटी कमनियों,
छोटे से लछमन वीर। मेरी सजनी प्यारा लगे।
राम जी पे सोहे केसरिया जामा
सीता के दक्खिनी चीर। मेरी सजनी प्यारा लगे।
सरयू के तीर अयोध्या नगरी
चौकी पे हनुमत वीर। मेरी सजनी प्यारा लगे॥



सुनि आई रे भागवत गीता ।
 सोने की थाली में भोजन परोसा
 खाय रहे रे राम और सीता । सुनि आई रे.....
 सोने का गडुआ गंगाजल पानी
 पी रहे रे राम और सीता । सुनि आई रे.....
 फूलों की सेज मोती झालर के तकिये
 सो रहे रे राम और सीता । सुनि आई रे.....
 चंदा की चाँदनी में चौपड़ बिछाया,
 खेल रहे रे राम और सीता । सुनि आई रे.....
 पान पचीसी के बीड़े लगाये,
 चाब रहे रे राम और सीता । सुनि आई रे.....



प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम ।
 श्रीराम राम राम श्रीराम राम राम ॥
 पाप कटै दुःख मिटै लेत राम नाम ।
 भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम ॥
 परम सांति सुख निधान नित्य राम नाम ।
 निराधार को आधार एक राम नाम ॥
 परम गोप्य परम इष्ट मंत्र राम नाम ।
 संत हृदय सदा बसत एक राम नाम ॥
 महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम ।
 कासि मरत मुक्त करत कहत राम नाम ॥
 मात-पिता बंधु सखा सबहि राम नाम ।
 भक्त जनन जीवनधन एक राम नाम ॥



राम नाम सुखधाम, रामनाम सुखधाम नाम शिव नाम ।
 सुमर दिनरात रे, हरिनाम सुमर दिन रात रे ।
 जनम सफल करले तू अपना ।
 सुन ले मेरी बात । पंच पाण्डवों ने जिस पथ पर किया प्रस्थान ।
 उस पथ पर जो चले प्राणी । उसका हो कल्याण ॥



यशोदा के दोनों लाल दिन दिन प्यारे लगें ।
 किसके पुत्र श्रीकृष्ण हुये हैं किसके ये बलराम ॥
 यशुदा के पुत्र श्रीकृष्ण हुए हैं रोहिणी के श्रीबलराम ।
 किसके आँगन छिटकी चाँदनी किसके आँगन घाम ॥
 यशुदा के आँगन छिटकी चाँदनी रोहिणी के आँगन घाम ॥



नन्दजी के अँगना रे माई तेरे बधाई बाजे ।
 कौन दीना हीरा मोती कौन दीना काँगना ॥ अरी ए....
 कौन दीना काँगना रे माई तेरे बधाई बाजे । अरी ए....
 राजा दीना हीरा मोती रानी दीना काँगना ॥ अरी ए....
 काहे मैं पहलूँ हीरा मोती काहे मैं पहनूँ काँगना ॥ अरी ए....
 गले मैं पहनूँ हीरा मोती हाथों मैं पहनूँ काँगना ॥ अरी ए....
 कौन दीना हाथी घोड़ा कौन दीना पालना ॥ अरी ए....
 राजा दीना हाथी घोड़ा रानी दीना पालना ॥ अरी ए....
 बैठे पंडित पोथी बाँचे नाम निकला साजना ॥ अरी ए....



हैं एक नई बात सुनि आई।
महरि जसोदा छेदा जायो घर घर बजत बधाई॥
अतिहि आनन्द होत गोकुल में रतन भूमि नियराई॥
द्वारे भीर गोप गोपिन की महिमा बरनी न जाई॥
नाचत तरुण वृद्ध और बालक गोरस कीच मचाई॥
सूरश्याम स्वामी सुख सागर सुन्दर श्याम कन्हाई॥



ब्रज में बजत बधाई अरी माई मैं सुनके आई।
सारे गोकुल में आनन्द भयो है।
यशुदा के भये हैं कन्हाई॥ अरी माई.....
नन्द दुवारे नौबत बाजे।
और बजे शहनाई॥ अरी माई मैं.....
नंद लुटावे हीरा और मोती।
जसुमति बलि बलि जाई॥ अरी माई.....



फूलन मथुरा छाई कन्हैया जी ने।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बहाई॥
इत ग्वाले उत गोपिन निकली, दही की लूट मचाई॥
अर्जुन भक्त चढ़े रथ ऊपर, प्रेम से गीता सुनाई॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, प्रेम की बंसी बजाई॥
छुई मुई फूल गिरे जमुना में, राधा बीनन को आई॥



देखो सखी वृन्दावन में वो मुरली श्याम बजावत है।
धर्म के पालन कारन से,
हरि ने जग में अवतार लिया।
मिल ग्वालन के संग में
जमुनातट धेनु चरावत है॥ देखो सखी.....
सर मोर के पंख की टोपी दिये,
मकराकृत कुण्डल कानन में-
गल में वनमाला विराजत है।
कटि में करधनी सुहावत है॥ देखो सखी.....
तन शोभित पट पीताम्बर से,
पग में पैजनियाँ बाजत है-
ब्रह्मानन्द निहारै अनूप छवी।
अपने मन में सुख पावत है॥ देखो सखी.....



जसोदा हरि पालना झुलावै।
हिलरावै दुलरावै म्लावै जोई सोई साधु गावै॥
मोरे लाल को आवै निंदरिया काहे न आनि सुआवै।
तू काहे न बेगि ही आवै तोको कान्ह बुलावै॥
कबहु पलक हरि मूँदि लेत है कबहुँ अधर पलकावै।
सोवत जानि मौनि हवै हवै रहि करि करि सैन बनावै।
इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ सो नंद भावनी पावै।

गोविन्द जय जय गोपाल जय जय
राधारमण हरि गोविन्द जय जय



यशोदा तेरे लाला ने माटी खाई।
 यदुनानी तेरे कान्हा ने ब्रजरज खाई।
 मेरे संग खेले नाँय दूर खेलन जाय,
 जमुना किनारे सींच सींच के चरावे गाय।
 मैंने देखी डेला में से तोड़ तोड़ माटी खाय,
 मैंने कही मैं तो तेरी मैया से कहूँगी जाय।।
 इस पर लड़े लड़ाई। यशोदा तेरे.....
 सुदामा की बातें सुन मैया ने बुलाये कान्ह।
 क्यों रे कान्हा बोल मोसे कहाँ से सीखा मट्टी खान।
 तेरी मुझसे कह गये हैं बातें सब ग्वाल बाल।
 मार के माधव तेरे मुख को करूँगी लाल।
 तैने मैं बहुत खिजाई। यशोदा तेरे.....
 माता को दिखाने को, खोलत हैं मुखारविन्द।
 जिसमें दीखे सातों द्वीप और दीखे सातों खण्ड।
 पृथ्वी आकाश तारे, और दीखे सूर्य चंद्र।
 ऐसी लीला देख, कर जोड़ खड़े दोनों नंद।
 मुख में सृष्टि रचाई। यशोदा तेरे.....



चरण कमल बन्दौ हरिराई।
 जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अन्धे को सब कछु दरसाई।
 बहिरो सुनै मूक पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई।
 सूरदास स्वामी करुनामय बार बार वन्दौ तेहि पाई।

गोविन्द गोविन्द हे प्रभो राधे श्रीराधे मोहन प्रिया
 राधारण बज के धनी श्यामा किशोरी श्रीहरिप्रिया



छिप छिप आये श्याम लेके ग्वाल बाल हैं।
 ऐसो ढीट माता देख तेरो नन्दलाल है।
 ग्वालन को संग ले घर में जो आ गये।
 माखन को खाय मेरी मटकी गिरा गये।
 अंगूठे दिखावे चले टेढ़ी मेढ़ी चाल है।
 देखो री जसोदा श्याम तेरो बड़ो रारि है।
 डगर चलत मेरी गगरी विगारी है।
 और दिखावे मोहे आँखें लाल लाल है।
 तोसे कहें आय तू तो कान पर उतार दे।
 बार बार दौड़ श्याम की बलइयाँ ले।
 द्वार पर पुकारे खड़े सभी ब्रज ग्वाल हैं।
 बोली जसोदा कहाँ श्याम को बताय दे।
 एक एक गगरी की दो दो भराय ले।
 पर मारियो न श्याम को गरीबनी को लाल है।
 ऐसो ढीट माता देख तेरो नन्दलाल है।।



माई मेरे स्याम न संग ते जाये।
 गाय दुहत दोहनी में बैठे आप दूध गटकाये।
 दही मथत मेरे ढिंग बैठे लौनी ले ले खाये।
 जमुना न्हाऊँ संग मेरे न्हावे लहर रूप है जावे।
 न्हाय चलूँ तब कलस उचावे ताही में पर जावे।
 सोवत लगूँ सेज पर पौढ़े दूलह सों तरसावे।
 सोवत लगूँ स्वजन में दीखे मुरली मधुर बजावे।
 न्याय करूँ सखियन के छाये आप पंचवन आवे।
 सूर सखी ऐसो कोइ ब्रज में जासों पिंड छुड़ावे।।



152

मैं तो हूँ भक्तन को दास भगत मेरे मुकुटमणि ।
जो मोहे भजै भजौ मैं वाकूँ हूँ भक्तन को दास ।
सेवा करे करूँ मैं सेवा हो पूरा विश्वास जानि ब्रह्माण्ड धनी ।
माखन चोरी करूँ दास हित आपन दऊँ बँधाय ।
झूठन पाऊँ गारी खाऊँ काँधे लऊँ चढ़ाय छोड़ प्रभुता अपनी ।
सत्य हेतु नंगे पद धायो गज की सुनत पुकार ।
चरण चापती कमला छोड़ूँ तनक न करूँ अबार ।
भजौ तज सेष अनी । मैं तो.....
जहँ जहँ भीर पड़ी भक्तन पे तहँ तहँ करूँ सहाय ।
दावानल को पानकर लऊँ लियो गिरिराज उठाय ।

इन्द्र महिमा वरनी ।

सेज बिछाऊँ चरण दबाऊँ कर सेवा सन्मान ।
दुर्योधन को मान घटाऊँ बन अर्जुन रथवान
विपत काँदूँ कितनी ।
भक्त हेतु रण छोड़ कहाऊँ अपनोपन तज हारूँ ।
भक्तन पै अन्याय देखकै कंस मामा कूँ मारूँ ।
और कहाऊँ घाती ।

भक्त रुचि सुतपितु बन जाऊँ सखा शिष्यगुरु
बेचे भक्त तुरत बिक जाऊँ चाहे जाके हाथ ।
त्याग महिमा अपनी ।।

153

अलबेलो छैल चिकनिया ब्रज में ठकुर दाऊ दयाल ।
बड़े बड़े कलश धरे सिंहासन न्हावे कूँ सिंगार ।
अतर फुलेल लगाके तन में मल-मल नाथ दयाल ।
हाथ कड़ूला गले गुंज और मोतियन की माल ।
याके बीच धुकधुकी सोहै हीरा जड़ रहे लाल ।
बड़े बड़े दूर ते जात्री आवै बृद्ध तरुन और बाल ।
माखन मिसरी को भोग लगावै और चढ़ावै माल ।।

154

मोहे दे दरशन गिरधारी, तेरी साँवरी सूरत पर वारी रे ।
जमुना तट हरि धेनु चरावे, मधुर-मधुर स्वर बेनु बजावे ।
काँधे कामरिया कारी, तेरी साँवरी सूरत पर वारी रे ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, रूप देखि मुनिगण मन मोहे ।
कुण्डल की छवि न्यारी, तेरी साँवरी सूरत पर वारी रे ।
भक्त हेतु हरि रूप बनाया, ब्रह्मानन्द मेरे मन भाया ।
चरण कमल बलिहारी रे, तेरी साँवरी सूरत पर वारी रे ।

155

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल ।
काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषय की माल ।।
महामोह के नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल ।
भरम भर्यो मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल ।।
तृष्णा नाद करत घट भीतर, नाना विधि दै ताल ।
माया कौ कटि फेंटा बाँध्यो, लोभ तिलक दै भाल ।।
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहीं काल ।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल ।।



156

बसो री मेरे नैनन में यह जोड़ी ।

अरी एरी सखि मन मोहन घनश्याम, राधिका अंग अंग गोरी ।
लाइले के सिर पचरंग चीरा, अरी एरी सखि नासा मोती झलक ।

कमल मुख राच रह्यो बीड़ा ।

कुंडल दोऊ कानन में झलकें, अरी एरी सखि ।
सुन्दर गोल कपोल मनोहर छिटक रही अलकें ।

लाइली के सर पर कुसम साड़ी ।

अरी एरी सखी लहंगा श्यामल रंग ।

काँचली की छबि है न्यारी ।

नैन दोऊ झूमे मतवारे अरी एरी सखि जिनकी शोभा निरख
निरख कर कोटि रसिक हारे ।

आभूषण अंग अंग सोहें, अरी एरी सखि ।

देखत बनत न कहत बनत रसिक नागर को मन मोहे ।

बसे री दोऊ रंग महल मांही ।

अरी सखि सुन्दर नन्दकिशोर परस्पर दिये गले बाँही ।

अंग अंग से वे श्री हरिदासी ।

अरी एरी सखी जिनकी कृपा कटाक्ष ।

सुदामा भये महल खवासी ।



157

अनूपम माधुरी जोड़ी हमारे श्याम श्यामा की ।
रसीली मद भरी आँखियाँ हमारे श्याम श्यामा की ।
कटीली भोंह अदा बाँकी, सुघड़ सुन्दर मधुर बतियाँ ।
लटक गर्दन की मन बसिया, हमारे श्याम श्यामा की ।
मुकुट सिर चन्द्रिका सोहे, अधर पर पान की लाली ।
अहो क्या ही भली छबि है हमारे श्याम श्यामा की ।
परस्पर मिलकर जब बिहरें श्री वृन्दावन की कुंजों में ।
नहीं वर्णत बने शोभा, हमारे श्याम श्यामा की ।
नहीं कुछ लालसा मन में, न है निर्वाण की इच्छा ।
रहे आँखों में यह जोड़ी, हमारे श्याम श्यामा की ॥

158

देखो री एक बाला जोगी द्वार हमारे आया है री ।
बाघम्बर पीताम्बर ओढ़े नाग शीश लपटाया है री ॥
माथे पे वाके तिलक चन्द्रमा सिर पर जटा बढ़ायो है री ।
ले भिक्षा निकली नन्दरानी मोतियन थाल भरायो है री ॥
ना चाहिये तेरी दुनिया दौलत ना चाहिये तेरी माया है री ।
अपने गोपाल के दरश करा दे जोगी दरश को आया है री ॥
ले बालक निकली नन्दरानी जोगी ने दरशन पाया है री ।
सात बार परिकरमा कर के सिंही नाद बजाया है री ॥
तीन लोक के अन्तरयामी बालक रूप धराया है री ।
सूरदास बैकुण्ठ लोक में, धन्य यशोदा माता है री ॥



मार किलकारी चढ़े हनुमान ।
भरी सभा रावण की कहिये, मालिन आय पुकारी ।
रामा मालिन आय पुकारी ॥
बगिया में एक बन्दर आया तोड़ डाले पेड़ उजाड़ डाली बाड़ी ।
राजा की फुलवारी योधा की फुलवारी चढ़े हनुमान मार किलकारी ॥



तुम्हें जानत नाँय पहचानत नाँय महावीर । मुँदरिया कहाँ पाई ॥
ना तुम देखे जनकपुरी में, ना भूपों के बीच । मुँदरिया...
ना तुम देखे अवधपुरी में ना सरयू के तीर । मुँदरिया...
ना तुम देखे चित्रकूट में, ना सन्तों के बीच । मुँदरिया...
ना तुम देखे पंचवटी में, जहाँ रावण बना फकीर । मुँदरिया...
ना तुम्हें देखा दण्डकवन में, जहाँ मारा मारीच । मुँदरिया...
सौ योजन मर्याद सिन्धु की, कौन है लॉघनहार । मुँदरिया...
यह मुँदरी मेरे प्राणपति की, उन्हें कौन है जीतनहार ।
हम तो सेवक श्रीराम के, मिले वनों के बीच ।
मुँदरिया वहाँ पाई ॥



राजा हरिश्चन्द्र से बोले ऐसी बानी आये बुरे दिन बिके तीनों प्राणी
किसने खरीदा राजा हरिश्चन्द्र दानी किसने खरीदे रोहित रानी
काल ने खरीदा राजा हरिश्चन्द्र को ब्राह्मण ने खरीदा सुत और रानी
मरघट के बासी वने हरिश्चन्द्र दानी । आये बुरे दिन बिके तीनों प्राणी
रोज रोज सुत वो तो बागों में जाता फूल छबरिया में भर के लाता
मैया को दिखाता वो हो रोहित लाला । आये बुरे दिन बिके तीनों प्राणी
एक दिन रोहित बागों में गया था काले नाग ने उसको डसा था
धरण पै गिरा वो तो हो रोहित लाला । आये बुरे दिन बिके तीनों प्राणी



हरि की हरी जानकी नारी रे ओ रावण अभिमानी
रावण झोली डार कुटिया पे आयो रे
भिक्षा डारो जनक दुलारी रे हो रावण अभिमानी
तेरे तो जोगी भिक्षा हरगिज नाय डारूँ रे
मेरे देवर दे गये आन रे ओ रावण गया अभिमानी
हाथ पकड़ सीता रथ बैठारी रे
पहुँचाय दई लंका जाय के ओ रावण अभिमानी
जो सल पड़ जाय मेरे लछमन देवरिया रे
तेरी लंकाये फूँक पजारे रे ओ रावण अभिमानी



उठे कृष्ण तरको भयो त्यारी की विरियां भयी हो रामा
काये की दातिनि काये को पानी कौन लिए खड़ी हो रामा
डाण की दातिनि गंगाजल पानी त्यारी माई जशोदा लिये खड़ी हो रामा
दूध बतासे और मलाई त्यारी जारी रुक्मिणी लिये खड़ी हो रामा
पाट पटम्बर और पीताम्बर त्यारी बहिनी उर्मिला लिए खड़ी हो रामा



अभिमान नहीं करना दूध दही से,
दूध दही दोनों भाई रे भाई उइन्हें दोष लागा जामन लगे से
गंगा रे यमुना ये दोनों बहने इन्हें दोष लागा न्हान पड़े से
ब्रह्मा रे विष्णु ये दोनों भाई, इन्हें दोष लागा भाँग घोटन से
चंदा रे सूरज ये दोनों भाई, इन्हें दोष लागा ग्रहण परे से



भगवान तेरी भक्ति में कोई ना सुखी
 एक राम सुखी एक लक्ष्मण सुखी
 जब वन को गये तब वो भी दुखी
 जब शक्ति लगी तब वो भी दुखी
 एक सीता सुखी एक रुक्मिणी सुखी
 जब हरण हुआ तो वो भी दुखी
 एक मीरा सुखी एक द्रौपदी सुखी
 जब जहर पिलाया तो वो भी दुखी
 जब चीर खिंचा तो वो भी दुखी
 एक रावण सुखी एक कंस सुखी
 जब लंक जली तो वो भी दुखी
 जब वध हुआ तो वो भी दुखी



ऊँचे से परवत बैठी देवी माय छानती दूध पानी
 उठ क्यों न देत मेरे वारे से लांगुरिया तो कौन सके को छल उलरो
 हो री माय....

एक तोरी भगतन को दल तो दूजे भगतिनी को डोला
 एक तो री बड़े लाला को डोला तो पीछे उनकी बहुरिया को डोला
 हो री माय....



करले गुरु का ध्यान अमृत बरसेगा।
 मात-पिता और गुरु की सेवा यही धरम का ज्ञान।
 सास-ससुर और पति की सेवा यही धरम का ज्ञान।
 प्रातकाल उठ सुमरन करके नारायण का ध्यान।
 नाम सुमर ले कर ले पर उपकार अमृत बरसेगा।



जय जय गिरिवर राज किशोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी।।
 जय गजवदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता।।
 नहि तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव वेद नहि जाना।।
 भव भव विभव पराभव कारिनि। विश्व विमोहिनी स्वजस विहाना।।

पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।

महिमा अमित न सकहि कहि सहस सारदा सेष।।

सेवत तोहिं सुलभ वर चारी। वर दायिनी पुरारि पियारी।।
 देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नरमुनि सब होंहि सुखारे।।
 मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहु सदा उर पुर सबही के।।



चौरासी घंटा बाजे री भवन चारों ओर
 कौन रे पाले मैया हरे की परेवा
 तो कौन ने पाले जंगी मोर.... चौरासी
 भगतिनी ने पाले मैया, हरे री परेवा
 तो भगतन ने पाले जंगी मोर....

बड़े लाला ने उनकी बहुरिया ने पाले

कहाँ रे बसिंगे मैया

महल बसेंगे मैया.... बाग बसेंगे

कहा रे चुगेंगे मैया... तो क्या

द्राख चुगेंगे मैया तो लौंग चुगेंगे



हे नाथ अब तो ऐसी दया हो जीवन निरर्थक जाने न पाये
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये कुछ बन न पाया मेरे बनाये
विषयों में ही आसक्त रहकर दिनरात अपने मतलब की कहकर
सुख के लिये लाखों दुख उठाये ये दिन अभी तक यों ही गँवाये
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ
प्रभु एक तुमको चाहूँ औ पाऊँ संसार का कुछ भय रह ना जाये
यह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ
भक्ति है साधन भव सिंधु तर लूँ ऐसा समय फिर आये न आये
हे नाथ मुझे निरभिमानी बना दो दारिद्र्य हर लो दानी बना दो
संसार पथ विज्ञानी बना दो मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये



जहाँ दिल में सफाई रहती है होवें पै सचाई रहती है।
हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।
मेहमाँ जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है।
ज्यादा की नहीं ख्वाहिश हमको, थोड़े में गुजारा होता है।
हम सबके लिये ये धरती माँ, सदियों से सभी कुछ देती है।
हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।



अल्ला तेरो नाम ईश्वर तेरो नाम। सब को सन्मति दे भगवान।
माँगों का सिन्दूर न छूटे। माँ बहनों की आस न टूटे।
सबको मिले सुख का वरदान।
ओ सारे जग के रखवाले। निरबल को बल देने वाले।
बलवानों को दे दे ज्ञान।



जय शिवशंकर नमामि शंकर शिवशंकर शम्भू शम्भू।
जय गिरिजापति भवानी शंकर शिवशंकर शम्भू शम्भू।।
दिव्य दिगम्बर चंद्रभाल धर शिव शंकर शम्भू शम्भू।
जय गौरी वर हर त्रिशूल धर शिवशंकर शम्भू शम्भू।।
जय नन्दीश्वर जय विश्वेश्वर शिवशंकर शम्भू शम्भू।
जय शशिशेखर बाघम्बर धर शिवशंकर शम्भू शम्भू।।
जय भूतेश्वर परमेश्वर हर शिवशंकर शम्भू शम्भू।
महा महेश्वर हर कृपालु हर शिवशंकर शम्भू शम्भू।।



चले श्यामसुन्दर से मिलने को भोला।।
भस्म रमी अंग पड़ा काँधे पे झोला,
मृगछाला को बगल में दबाये।
कर में त्रिशूल भोला डमरु बजाये।। भस्म रमी.....
जाकर के द्वारे अलख को जगाया,
अन्दर से भरा थाल मोतियों का आया।।
यशोदा कहें भिक्षा ले जाओ भोला।। भस्म रमी.....
ना माता मैं भिक्षा का आदी,
मोहन के दर्शन को अँखियाँ हैं प्यासी।
दर्शन करा दो मगन होये भोला।। भस्म रमी.....
जब भोले बाबा ने दर्शन जो पाये,
देवों ने फूल देखो नभ से गिराये।
कैसा हुआ ये मिलन अनमोला।। भस्म रमी.....

जय शिवशंकर जय शिवशंकर
जय भोले जय पार्वती



जय शिव जय महाकाल ।

भूतनाथ शंकर जय ।

जय जय कैलाशपते त्रैलोचन त्रिपुरारे । जय शिव....

महादेव गिरिजापति पाप हरण आशुतोष ।

मदनदहन पशुपति जय हर हर शम्भो जय । जय शिव..

जटाजूट गंगाजल कंठ सोहे रुण्डमाल ।

कर त्रिशूल डमरुधर भक्तन के पाप हरे । जय शिव....



भक्त एक शिव का चला, शिव को मनाने के लिये ।

दो फूल और एक लोटा जल चढ़ाने के लिए ।

पहुँच कर शिव जी के मंदिर जाकर वह बैठ गया ।

स्तुति करने लगा शिव को मनाने के लिये ।

स्तुति करके हो गया उठकर खड़ा ।

हाथ ऊपर को किया घंटा बजाने के लिये ॥

देखकर सोने का घंटा पड़ गया वह सोच में (लोभ में)

युक्तियाँ करने लगा घंटा चुराने के लिये ।

हाथ ऊपर को किया पर हाथ ऊपर ना गया ।

चढ़ गया शिवलिंग पर घंटा चुराने के लिये ॥

देखकर उसकी यह भक्ति हो गये शंकर प्रकट ।

हो गया तैयार वह तो भाग जाने के लिये ।

पकड़ कर हाथ शिव बोले भक्त तुम जाते कहाँ ।

मैं तो आया हूँ तुम्हें दर्शन दिखाने के लिये ।

भूल से भी एक लोटा जल चढ़ा देता मुझे ।

भर देता हूँ उसके खाली हाथ खजाने के लिये ।

तुमने तो सर्वस्व अर्पण कर दिया ।

इसलिए आया हूँ तुम्हें वरदान देने के लिये ॥



स्तुति श्री शिवजी

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयम् । गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ॥
करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरम् । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुण्डलं भू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालम् ॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालम् । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम् । अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशम् ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी ॥
चिदानन्द संदोह मोहापकारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम् । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति संताप नाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधि वासम् ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजाम् । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानम् । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥



पशूनां पतिं पापनाश परेशम् । गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसान वरेण्यम् ॥
जटाजूट मध्ये स्फुरद् गंगवारिम् । महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि ॥
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णम् । गवेन्द्राधिरुढं गुणातीत रूपम् ॥
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगम् । भवानीकलत्रं भजे पंचवक्त्रम् ॥
शिवाकान्ति शम्भो शशांकार्धमौले । महेशान् शूलिन जटाजूट धारिन् ॥
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप । प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ । महादेव शंभो महेश त्रिनेत्र ॥
शिवाकान्त शांत स्मरारे पुरारे । त्वदन्योवरेण्यो नमान्यो नगण्यः ॥

आरतियाँ

179

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

180

आरती श्रीराम जी

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ॥
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव, दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कंद कौशल, चन्द्र दशरथ नन्दनम् ॥
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम् ॥

181

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुवन्ति दिव्यैस्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनः ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणां, देवाय तस्मै नमः ॥

182

आरती श्रीकृष्ण

श्रीकृष्णचन्द्र कृपालु भजु मन, नन्दनन्दन सुन्दरम् ।
अशरण शरण भवभय हरण, आनन्दधन राधावरम् ।
शिरमोर मुकुट विचित्र मणिमय, मकर कुण्डलधारिणम् ॥
मुखचन्द्र द्युतिनख चन्द्र द्युति, पुष्पित निकुंज विहारिणम् ।
मुस्कानि मुनि मन मोहिनी, चितवनि चपल वपु नटवरम् ॥
बनमाल ललित कपोल मृदु, अधरन मधुर मुरलीधरम् ।
वृषभानुनन्दनि वाम दिशि, शोभित सुमन सिंहासनम् ॥
ललितादि सखिजन सेवही, करि चँवर छत्र उपासनम् ।
इति वदति कवि जयराम देव, महेश हृदयानन्दनम् ।
दीजै दरश प्रिय प्राण धन, मम विरह कंस निकन्दनम् ॥

183

आरती दिव्य दम्पति

दिव्य दम्पति की आरती उतारो हे अली
राधे नन्द जू को लाल वृषभानु की लली
पद नख मणि चन्द्रिका की उज्ज्वल प्रभा
नील पीत पट कटि रही मन को लुभा
कटि कोंधनी की शोभा अति लगत भली । दिव्य...
नाभि रुचिर गम्भीर मानो भंवर पड़े
उर कौस्तुभ मणि भृगु पद उभरे
वनमाला उर सोहै कंठ मिसरी । दिव्य...
शीश चंद्रिका मुकुट त्रिभुवन धन के
अंग दिव्य भूषण कनक मणी के
सोहे श्याम कर कंज श्याम कर मुरली । दिव्य...
चितवनि मुसकनि प्रेम रस बरसे
जिय हरषि नारायण चरण परसे
जय जय कहि देव बरसे सुमन अंजली । दिव्य...



आरती श्रीहरि

आरती श्रीहरि घट घट वासी ।
श्री सच्चिदानन्द सुखराशी ।
पुरुषोत्तम नारायण स्वामी ।
करुणानिधि उर अन्तर्यामी ।
कमलापति श्री विष्णु नमामी ।
मंगलमय वैकुण्ठ निवासी ॥ आरती श्री ॥

आरति राघव राम जानकी ।
भरत लखन श्री हनूमान की ।
लंकापति कपिपति सुजान की ।
रिपुसूदन अंगद बलराशी ॥ आरती श्री ॥

आरति राधाकृष्ण मुरारी ।
नंदनंदन भक्तन हितकारी ।
केशव वासुदेव बनवारी ।
आरति श्रीकृष्ण चन्द्र अविनाशी ॥ आरती श्री ॥

आरती गिरिजा शंकर प्यारे ।
दुर्गा रवि शशि गणपति तारे ।
सकल देव सब संत हमारे ।
सतगुरु एक रसानन्द राशी ॥ आरती श्री ॥

आरति नारद शारद स्वामी ।
काग भुशुंडि भजन सुखधामी ।
व्यास आदि शुकदेव नमामी ।
मंजुल तुलसी मंगल काशी ॥ आरती श्री ॥



आरती सत्यनारायण जी की

जय लक्ष्मी रमणा श्रीजय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥
रत्न जटित सिंहासन अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत नीराजन घंटा ध्वनि बाजे ॥

प्रगट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो ।
बूढ़े ब्राह्मण वनके कञ्चन महल कियो ॥
दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपती हरी ॥

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ॥
भाव भक्ति के कारण क्षण-क्षण रूप धरो ।
श्रद्धा धारण कीनी तिनका काम बनो ॥

गवाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्यो दीन दयालु हरी ॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से राजी सत् देवा ॥

श्री सत्यनारायणजी की जो आरती गावे ।
भगत राम प्रसाद मनवांछित फल पावे ।

जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा ॥



आरती श्रीशिव जी की

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे ।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद चंदा भाले शुभकारी ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥

करमध्ये कमंडलु चक्रत्रिशूल धरता ।
जग करता जगभरता जग पालन करता ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाधार एको यह तीनों एका ॥

त्रिगुण स्वामी जी की आरति जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥
ओम् जय शिव ओंकारा ॥



स्तुति देवी जी की

प्रथम अम्बे जी का सुमिरन करके, हृदय ज्ञान दृढ़ाइये ।
दर्शन दे दो महामाई जन को, भक्त पदार्थ पाइये ।
श्रीचंडी चरण प्रणाम हम.....

काहे कारण भई है जननी, काहे कारण भार्या ।
काहे कारण भई है देवी, काहे कारण कालका ।
जन्म कारण भई है जननी, भोग कारण भार्या ।
पूजा कारण भई है देवी, दुष्ट मारन कालका ।
श्रीचंडी चरण प्रणाम हम.....

किस गुण में देवी सावित्री कहिये किस युग में देवी द्रौपदी ।
किस युग में देवी तिलजा जी कहिये किस युग में देवी कालका ।
सतयुग में देवी सावित्री कहिये, द्वापर में देवी द्रौपदी ।
त्रेता में देवी तिलजा जी कहिये कलयुग में देवी कालका ।
श्रीचंडी चरण प्रणाम हम.....

ब्रह्मा के घर सावित्री कहिये विष्णु के घर लक्ष्मी ।
महारुद्र घर अर्धन्ग गौरा श्री चण्डी चरण प्रणाम हम ।
चार युग की चार महिमा पढ़त पाप विनाशनम् ।
कोटि मुनिजन करत जय जय की चड़ी चरण प्रणाम हम ।
आदि मायाजुगादि माया, माया है अति मोहनी ।
सुर नर मुनि सब खड़े द्वार पर, श्रीचंडी चरण प्रणाम हम ॥



अथ स्वस्तिवाचनम्

हरिः ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा
प्रियपतिः हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम ।

आहमजानि गंर्भधमा त्वमजामि गंर्भधम् ।

ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति न स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।

ॐ पयः पृथिव्यां पयः ओषधीषु पयोदिव्यन्तन्तरिक्षे पयोधाः ।

पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।

ॐ विष्णोरराट्मसि विष्णोः शनज्नेस्थो विष्णोः स्यूरसि

विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वृष्णवमसि-वृष्णवेत्त्वा ।

ॐ अग्निर्देवता व्यात देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता

वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता

विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ३ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः

शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मा

शान्तिः सर्वं ३ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।

अपराध सहस्रभाजनं

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसंभवः,

पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपाप हरो हरिः ।

अज्ञानात् ज्ञानाद्वा यच्च पापं कृतं मया,

तत्सर्वं क्षन्तव्यं दासोऽस्मि तव राघवः ॥

भक्तिमती माँ श्रीमती माया गुप्ता

का

जीवन परिचय

निकुंजवासी हमारी माँ श्रीमती माया गुप्ता का जन्म 9 दिसम्बर, 1933 (मार्गशीर्ष की सप्तमी) को तीर्थराज प्रयाग में हुआ था। 1997 से माँ ने निरंतर वृन्दावन वास किया और वृन्दावन के परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्रद्धेय संत श्री सत्यानन्द जी (कृपा विलास आश्रम) के श्रीचरणों का आश्रय प्राप्त किया। पिछले 16 वर्षों में उन्होंने अपना जीवन वृन्दावन के देवालयों के दर्शन, भागवत श्रवण, सत्संग, धाम परिक्रमाओं व साधु-सेवा में व्यतीत किया और श्रीजी, गुरु कृपा व अपनी प्रबल इच्छा से श्री कात्यायनी देवी के प्राकट्य दिवस पर 3 अक्टूबर, 2013 को ब्रजरज में अपने पार्थिव विग्रह से विलीन हो गयीं। शरीर त्यागने से चार घंटे पहले उन्होंने गीता के 18 अध्यायों और सेवाकुंज की मंगला आरती का श्रवण किया। सेवाकुंज की प्रसादी माला, चंदन, चरणामृत व रज ग्रहण करने के उपरांत ही शरीर छोड़ दिया।

‘जय श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहिं बिनु या रजहिं लिये’

पिछले कुछ समय से माँ अपने जाने का संकेत दे रही थीं, पर उनका अन्त वैसे ही हुआ जैसा उन्होंने लगभग 65 वर्ष पूर्व अपने इस भजन संग्रह के पहले ही भजन में भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना की थी। इसमें उन्होंने वृन्दावन वास, ब्रज के वनों की रज प्राप्ति, ठाकुरजी का चरणामृत, उनकी सेवा और अपने अपराधों को क्षमा करने की याचना की थी। माँ यह सब पाकर ही इस नश्वर संसार से गईं। उनके देहावसान के बाद श्रद्धेय गोस्वामीगणों ने उनके पार्थिव शरीर पर लेपन के लिए नंदगांव की रज, गहवरवन की रज, गोवर्धन की रज, श्रीकृष्ण जन्मस्थान की रज व नंदभवन (नंदग्राम), श्रीजी महल, (बरसाना) मुखारविंद दानघाटी, बांकेबिहारी जी व श्रीकृष्ण जन्मस्थान से चंदन, चरणामृत व प्रसादी माला भेजी। उनके शरीर को अलंकृत कर हंस विमान में आरुढ़ कर, भक्तमण्डली व गाजे-बाजे के साथ

संतगणों व भक्तजनों व ब्रजवासियों के कंधे पर यमुना घाट ले जाया गया। मार्ग में उनके पार्थिव शरीर को बांकेबिहारी मंदिर की परिक्रमा, राधावल्लभलाल, सेवाकुंज, रासमण्डल, श्रीराधारमण मंदिर, श्रीराधा गोपीनाथ मंदिर, आदि के बाहर से दर्शन कराते हुए ले जाया गया।

उनकी अन्तिम यात्रा शुरू होने के पहले वृन्दावन में तेज धूप और गर्मी थी, पर जैसे ही उनका विमान उनके निवास राधिका कुंज, भजन कुटीर, शीतल छाया, रमणरेती, वृन्दावन से चला ठाकुरजी ने आकाश को काले बादलों से आच्छादित कर दिया। पूरे दो घंटे की यात्रा व दाह संस्कार के दौरान इतनी ठंडी हवा बहती रही कि शाल मेंगवाने पड़े। सबने कहा कि प्रकृति भी कर रही है एक भक्तिमती का सम्मान। यमुना में शुद्ध जल कल-कल बह रहा था। सूर्यास्त होने वाला था। अग्नि प्रज्ज्वलित होते ही चिता धूँ-धूँ कर जलने लगी और थोड़ी ही देर में उनका शरीर पंचतत्त्वों में विलीन हो गया। उस दिन से लगातार हमारे आवास पर संतों का पधारना, आध्यात्मिक उत्सवों का आयोजन, भागवत पाठ, संत श्री राजेन्द्रदास जी की भक्तमाल कथा, बरसाना के स्वामी कन्हैयालालजी की रासलीला का मंचन, कीर्तन व ब्रज रज महात्म्य पर संत गोष्ठी आदि के अनेक दिव्य कार्यक्रम होते रहे।

10 वर्ष की आयु में लगभग 1943 में मैंने ठाकुरजी का एक चित्र लखनऊ में प्राप्त किया था, जिसे उन्होंने अन्तिम दिन तक अपनी दृष्टि के सामने रखा। इन्हें वे नीलमणि गोपाल कहती थीं। अपनी दैनिक डायरी में उनका उल्लेख करती थीं। उनका एक हस्तलिखित लेख हमें प्राप्त हुआ है, जिसमें उन्होंने ऐसी अनेक घटनाओं का वर्णन किया है जब नीलमणि गोपाल ने आकर उनकी संकट में चमत्कारिक मदद की। पर इस बात का उल्लेख उन्होंने हमसे कभी नहीं किया।

मूलतः छाता (मथुरा) के ब्रजवासी उनके पिता उत्तर प्रदेश की विधान परिषद् के सचिव थे। इस कारण बचपन से उनका पारिवारिक सम्बन्ध देश के प्रमुख राजनैतिक परिवारों से रहा। इसलिए भारतीय राजनीति में भी उनकी काफी रुचि थी। उन्होंने बचपन से ही संस्कृत

का अध्ययन किया और काशी के संस्कृत संस्थानों से कई परीक्षायें उत्तीर्ण कर लखनऊ विश्वविद्यालय से 1954 में संस्कृत में एम. ए. किया। संस्कृत के अलावा उन्हें भारतीय व यूरोपीय इतिहास, राजनीति शास्त्र, बागवानी, आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति, हिन्दी साहित्य व शास्त्रीय संगीत का गहरा ज्ञान था। वे विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति में भी सक्रिय रही और अपनी प्रौढ़ अवस्था में उन्होंने ग्रामीण विकास के कार्यों को भी सम्पादित किया। उन्होंने भारत के लगभग सभी तीर्थों के दर्शन किये व मूलतः राया-मथुरा निवासी अपने पति डॉ. आर. एन. गुप्ता के साथ अनेक देशों की यात्राएँ कीं। उनके पति उत्तर प्रदेश के जाने माने शिक्षाविद् थे व रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय व पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

यूँ तो हमारी माँ बहुआयामी प्रतिभाओं की धनी थीं, पर उन्होंने जीवन भर स्वयं को छिपाकर रखा। अपनी बड़ी बड़ी उपलब्धियों की कोई चर्चा वे नहीं करती थीं। पर हमें जो शिक्षा, संस्कार और ज्ञान उन्होंने दिया वह हमारे लिए बहुमूल्य और चिरस्मरणीय है। उनके निधन पर आने वाले अनेक संतगणों, गोस्वामीगणों, भागवताचार्यों व ब्रजवासियों ने मुक्त हृदय से उनकी धाम निष्ठा, नाम निष्ठा, संत निष्ठा और ठाकुरजी में निष्ठा को प्रणाम किया। हमारे जैसे तुच्छ जीवों के लिए यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि हमें ऐसी माँ का ममत्व व संरक्षण प्राप्त हुआ। इससे अधिक उनके विषय में कहने की आवश्यकता नहीं है। उनके जो भी प्रेमीजन, परिचित और कृपापात्र रहे हैं, वे उनके व्यक्तित्व को हमसे अधिक जानते हैं। हमारी उनके चरणों में यही प्रार्थना है कि वे हमें जुगल जोड़ी सरकार के श्रीचरणों में भक्ति करने की सामर्थ्य प्रदान करें और श्रीब्रज धाम को सजाने के हमारे विनम्र प्रयास को सफल होने का आशीर्वाद प्रदान करें।

आपके दासानुदास—

विनीत नारायण

अपर्णा पोद्दार

अभिजित गुप्ता

श्रद्धांजलि के दो शब्द

• सरला तिवारी •

माया तुम मेरे जीवन की सम्बल थीं मोक्ष धाम को चली गयीं
तुमको शतबार नमन तुमको शतबार नमन
तीनों अक्टूबर मोक्ष दायिनी तिथि को प्राणों का परित्याग किया
संभ्रान्त कुल में जन्मी, संभ्रांत कुल में परिवार बसाया
घर की बगिया को खूब सजाया था
प्रतिभाशाली, कार्यकुशल, व्यवहार कुशल बेटों को जन्म देकर
धन्य हुई माया तुमको शतबार नमन, शतबार नमन
माया तुम सचमुच माया थीं अदम्य साहस, निर्भीकता की
साकार मूर्ति जो भी तुम्हारे निकट आता, भूल न तुमको पाता है
फिर हम कैसे भूलें तुम तो हमारी बचपन की सहपाठी थीं
तुमने हमारे जीवन के सुख दुःख सभी क्षणों में घर से बढ़कर
माना सच है सच्चा मित्र नहीं मिलता, फिर उसके जाने पर
कितना दुःख होता यह कैसे व्यक्त करूं माया तुमको शतबार नमन
शतबार नमन कैसे भूलूं, जब भी प्रयास करती हूँ
नया रूप तुम्हारा आ जाता है, लगता है तुमसे मिल रही हूँ
किन्तु यह सब मृगतृष्णा है, बस अब तो केवल स्मृतियाँ ही हैं
क्रूर नियति किसी न सुनती, माँ को बेटों से छीन लिया
माया तुमको शतबार नमन माया तुमको शतबार नमन
माया तुम बृजमंडल की पावन तपोभूमि में अपने जीवन
के अंत दिनों में रहकर धन्य हुई प्रबल इच्छा थी
वृंदावन आकर तुमसे मिलूं, किन्तु यह सब हो न सका
बस यही दुःख है कि तुम्हारे जाने के पहले एक बार और
तुमसे मिल लेती किन्तु अब तो स्मृतियाँ ही शेष हैं,
जो जीवन के अंत समय तक याद करूँगी, याद करूँगी
माया तुमको शतबार नमन शतबार नमन

(माँ की बचपन से प्रगाढ़ मित्र के उद्गार)